

તૌબા વ દુઆ

ઈસ કિતાબ મેં આપ પઢેંગે....

- હુઝૂર કે વસીલે સે હઝરતે આદમ કી તૌબા કુબૂલ હોના 06
- તૌબા કિસ કી કુબૂલ, કિસ કી ના કુબૂલ ? 12
- હમ પર અઝાબ કયું નહીં આતા ? 17
- ગુનહગારોં કે હક મેં હુઝૂરે પાક કી દુઆ 27
- મૌત સે મહબ્બત 41

-: મુઅલ્લિફ :-

ખલીફએ શૈખુલ ઈસ્લામ હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



તોબા વ દુઆ



-: મુઅલ્લિફ :-

ખલીફાએ શૈખુલ ઇસ્લામ

હાજી ઇબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા

પ્રેસિડેન્ટ : મોહસિને આઝમ મિશન સેન્ટ્રલ કમેટી

અહમદાબાદ, M : 96 24 22 12 12

જુમ્લા હુકૂક બ હકકે મોહસિને આઝમ મિશન મહફૂઝ હેં.

કિતાબ : તૌબા વ ફુઆ (ગુજરાતી)

મુઅલ્લિફ : ખલીફએ શૈખુલ ઈસ્લામ

હાજી ઈબ્રાહીમ ભાઈ વડીયાવાલા (અહમદાબાદ)

ટાઈપ-સેટીંગ : જનાબ તૌફીક અહમદ અશરફી (બખૌદા)

M : 9033168086, 7383761217

તા'દાદ : 10,000

કીમત : 10

સિને ઈશાઅત : નવમ્બર-2020

નાશિર : મોહસિને આઝમ મિશન સેન્ટ્રલ કમિટી 2/B કીર્તિકુંજ
સોસાયટી શાહે આલમ ટોલનાકા અહમદાબાદ-380028

-: મિલને કા પતા :-

મક્તબએ શૈખુલ ઈસ્લામ, અલિફ કિરાના કે સામને,

રસૂલાબાદ, શાહે આલમ અહમદાબાદ-380028

और मोहसिने आज़म मिशन की तमाम ग्रान्थें

કોન્ટેકટ : 96 24 22 12 12

तौबा व दुआ

इंडरिस्त	सईडा नम्बर
मुकदमा	5
हुजूर के वसीले से हजरते आदम की तौबा कुबूल होना	6
यहूदी भी हमारे नबी के वसीले से दुआअे करते थे	8
अल्लाह पाक इरमाता है : मुज से मांगो	8
तौबा और नदामत से गुनाह मिटा दिये जाते है	11
तौबा किस की कुबूल, किस की ना कुबूल ?	12
हुजूर के वसीले से उम्मतियों की दुआ का कुबूल होना	14
दुआ आखिस्ता और गिणगिणा कर मांगे	15
हम पर अजाब क्यूं नहीं आता ?	17
तौबा करने वालों की पाकीजा जिन्दगी (मताअे हसन)	18
दुआ में क्या न मांगे ?	20
बेशक ! नेकियां बुराईयों को मिटा देती है	21
पताकारों का बुजुर्गों के वसीले से दुआ कराना	21
अगर अल्लाह मोहलत न देता तो क्या होता ?	22
दुआअे हजरते सुलैमान <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small>	23
तौबा करने वालों पर बणा ईन्आम (बणा करम)	24
तौबा में जल्दी करना याहिये	25
गुनहगारो ! अल्लाह की रहमत से मायूस न हो	25
तौबा करने वालों के हक में इरिशतों की दुआअे	26
गुनहगारों के हक में हुजुरे पाक की दुआ	27
अल्लाह इरमाता है : मुज से मांगो मैं अता करूंगा	28
दुआअे हजरते सय्यिदुना सिदीके अकबर	29

તોબા વ દુઆ

ગુનાહે કબીરા	29
અલ્લાહ કે આગે રોના	30
તૌબતનુસૂહ કયા હૈ ?	31
તૌબા કરને વાલે કો હઝરતે નૂહ કે વા'દે	32
જાહિલોં સે દૂર હટ જાઓ	33
બુરાઈ સે ન રોકને વાલે	35
લોગોં કો અલ્લાહ કી નાફરમાની સે રોકને વાલે	37
નહ્યુન અનિલ મુન્કર ઝરૂરી હૈ	38
તરીકએ દા'વત	39
અપને કરાબતદારોં કો ડરાઓ	40
જો લોગોં કો નેકી કી તરફ બુલાએ	41
મૌત સે મહબ્બત	41
મૌત કી હકીકત	43
મૌત સે પહલે આઝમાઈશ	43
કિતાબ કી છપાઈ મેં મદદ (ડોનેટ) કરને વાલોં કે નામ	47

મુફીદ વઝીફા

સૂરએ ઈખ્લાસ ગ્યારહ બાર સુબહ (આધી રાત ઢલે સે સૂરજ કી પહલી કિરન ચમકને તક સુબહ હૈ) પઢને વાલે પર અગર શૈતાન મઅ લશ્કર કે કોશિશ કરે કે ઈસ સે ગુનાહ કરાએ તો ન કરા સકે જબ તક કે યેહ ખુદ ન કરે.

(અલ વઝીફતુલ કરીમા)

પેશે લફ્ઝ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
تَخْدَعًا وَنَصْلًا عَلَىٰ رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ

અરબી ભાષા મેં તોબા કા અર્થ ઓર મતલબ રુઝૂઅ કરના યા'ની વાપસ આના યા લૌટના હૈ. લિહાઝા અલ્લાહ કી રાહ મેં તોબા કા મતલબ યેહ હૈ કે કોઈ અલ્લાહ કે ખોફ સે ઓર અલ્લાહ કી રિઝા (પુશી) કે લિએ ઉન કામોં કો છોળ દે જિસ સે અલ્લાહ ને રોકા હૈ ઓર ઉન કામોં કો બજા લાએ (શુરૂઅ કરે) જિન કો કરને કા હુકમ અલ્લાહ ને દિયા હૈ. ખુલાસા યેહ કે બુરાઈ કો છોળ કર અચ્છાઈ કી તરફ વાપસ આને કા નામ હી તોબા હૈ. ઈસી તરહ દુઆ ભી બન્દે કો અપને રબ સે.

કુરઆને કરીમ ઓર અહાદીસે મુબારકા મેં તોબા વ દુઆ કી ઝરરત, અહમ્મિયત, ફઝીલત વ ફાઈદોં કા જિફ કસરત કે સાથ મિલતા હૈ. ઓલિયાએ કિરામ ને ભી અપની કિતાબોં મેં તોબા વ દુઆ કે મૌઝૂઅ (વિષય) પર બહુત તફસીલ સે બયાન કિયા હૈ.

ઈસ કિતાબ **“તોબા વ દુઆ”** મેં મુઅલ્લિફે કિતાબ ખલીફએ શૈખુલ ઈસ્લામ જનાબ હાજી ઈબ્રાહીમ અશરફી સાહિબ ને તોબા ઓર દુઆ કે તઅલ્લુક સે એક મુફીદ મઝમૂન મુરત્તબ કર કે પેશ કિયા હૈ.

મુઅલ્લિફે મૌસૂફ ને કિતાબ મેં કુરઆને કરીમ કી આયાત કે તર્જમે વ તફસીર કે સાથ જિફ કિયા હૈ. અમ્બિયા વ સાલિહીન કે વાકિઆત કે ઝરીએ મૌઝૂઅ કો ખૂબ અચ્છે અન્દાઝ મેં પેશ કિયા હૈ.

ઈસ કિતાબ મેં આપ કો દુઆ કા તરીકા ઓર દુઆ કી કબૂલિયત વ અદ્દમે કબૂલિયત કી વુઝૂહાત કે બયાન કે સાથ સાથ તોબા કે તઅલ્લુક સે બુઝુર્ગોં કે બયાન કર્દા શરાઈત (શર્તોં) કો ભી યક્જા (એક હી જગહ) મિલ જાએંગે.

અલ્લાહ તઆલા જનાબે મુઅલ્લિફ કી ઈન કાવિશોં કો કબૂલ ફરમાએ ઓર ઈન કે ઈલ્મો અમલ મેં બરકત નાઝિલ ફરમાએ ઓર બુઝુર્ગોં કે પૈગામ કો આમ કરને કે ઈસ મિશન મેં ઉન્હેં તાકત વ કામયાબી અતા ફરમાએ. આમીન



26-10-26

સચ્ચિદ હસન અસ્કરી અશરફ અશરફી અલ જીલાની
સજજાદા નશીન આસ્તાનએ હુઝૂર મુહદ્દિસે આ'ઝમે હિન્દ વ
સજજાદા નશીન આસ્તાનએ હુઝૂર અમીરે મિલ્લત رَحْمَهُمَا اللهُ تَعَالَى

तौबा व द्वा

दुन्या में कुछ तो ऐसे हैं के जब उन से कडा जाये के तौबा करो, तो कहते हैं के हम को तौबा की छाजत नहीं है और कहते हैं के हम ने ऐसा किया ही क्या है के हम तौबा करे ? और बा'ज कहते हैं अभी हमारे पास जिन्दगी पणी है बा'द में तौबा कर लेंगे या बुढापे में तौबा कर लेंगे.

और बा'ज ऐसे हैं के वोड वसीले को शिर्क कहते हैं और कहते हैं हमें वसीले की जरूरत नहीं हमारे आ'माल ही हमारा वसीला है और बा'ज बिल्वा बिल्वा कर रियाकाराना अन्दाज में द्वाओ करते हैं उन लोगों को तौबा व द्वा का सहीड ईस्लामी तरीका समझने के लिये येड किताब तय्यार की गई. मौला तआला नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके ईसे मकबूलियत का जमा पहनाओ और कौम को सख्खी और सहीड समज अता इरमाओ. आमीन

हुमूर के वसीले से हजरते आदम की तौबा कुबूल होना

कुरआने करीम पारह 1 सूरे अल बकरह आयत नं 36-37 में हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का वाकिया कुछ ईस तरह बयान किया गया के

तर्जमा : शैतान ने उन्हें लज्जिश दी और जहां रहते थे वहां से निकलवा दिया और हम ने इरमाया नीये उतरो तुम आपस में ओक दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हें ओक मुकरर वक्त तक वहां रहना है और भरतना है इर आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे सीध लिये तो अल्लाह ने उन की तौबा कुबूल की बेशक ! वोही तौबा कुबूल करने वाला महेरबान है.

जब सख्खिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام और हजरते हुवा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को जन्नत से जमीन पर जाने का हुक्म हुवा तो हजरते आदम

عَلَيْهِ السَّلَامُ सरजमीने छिन्द में सरानदीप जिस को आज श्रीलंका कहते है वहां उतरे और मां हव्वा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जिद्द में उतारे गये.

अबुल बशर सय्यिद्दुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने जमीन पर आने के बाद हुआ की वजह से तीन सौ (300) बरस तक आस्मान की तरफ नहीं देखा अगर्ने उतरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का लकब “कसीरुल बुका” (बहुत जियादा रोने वाला) हैं और आप के आंसू तमाम जमीन वालों के आंसूओं से जियादा है मगर उतरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के आंसू उतरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और तमाम दुन्या वालों के आंसूओं से भी जियादा है.

उतरते सय्यिद्दुना मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم रिवायत करते है के जब उतरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इताब हुवा तो आप तौबा की झिंक में परेशान थे, इसी परेशानी के आलम में आप को याद आया के ब वकते पैदाईश जब मैं ने सर उठा कर देखा था तो अर्श पर लिखा हुवा पाया (آلِ الْأَنْبِيَاءِ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) मैं ने सोया के अल्लाह रब्बुल इत्तत की बारगाह में जो रुत्बा मुहम्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हासिल है वोह किसी और को मुयस्सर नहीं है अल्लाह तबारक व तआला ने अपने नाम के साथ अर्श पर उन का नाम लिखा है.

लिहाजा उतरत ने अपनी द्हुआ में रब्बना जलमना के साथ येह मिला कर अर्ज किया : यानी ऐ अल्लाह ! तेरे बन्देओ पास मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तुफैल में तुज से मगफिरत याहता हूं येह द्हुआ करनी थी के अल्लाह तबारक व तआला ने उन की तौबा कुबूल की और मगफिरत इरमाई.

इस रिवायत से साबित हुवा के बुरुगाने दीन और मकबूलाने बारगाह के वसीले से द्हुआ करना जाईज है. और सिर्फ जाईज ही नहीं बल्के येह अल्लाह तआला का पसन्दीदा अमल है और सुन्नते अम्बिया है.

यहूदी भी हमारे नबी के वसीले से दुआओ करते थे

हमारे आका के हमारे भीय में तशरीफ़ लाने के पड़ले भी बनी इसराएल जब जब उन पर कोई मुसीबत आती या दुश्मनों से लणाई का मुआमला पैश आता तो सरकारे दौ आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के वसीले से अल्लाह तआला की बारगाह में दुआओ करते थे और इत्ह व नुस्त और कामियाबी पाते थे. जैसा के अल्लाह तबारक व तआला पारह 1 सूअे अल बकरह आयत नं 89 में फ़रमाता है :

तर्जमा : और इस से पड़ले वोह इसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर इत्ह मांगते थे.

उन के अल्लाह कुछ इस तरह के रहते थे के : **“अल्लाहुम्म इत्ह अलैना व-सुर्ना बिन्नबिद्यिल उम्मी”** या'नी : अै अल्लाह ! हुमें नबिये उम्मी के सफ़डे में इत्ह और मदद अता फ़रमा.

इस आयत से साबित हुवा के हुजूरे पाक की दुन्या में तशरीफ़ आवरी से पड़ले भी आप की शौहरत थी. आप का दुन्या में आ जाने के बा'द मगर अे'लाने नबुव्वत के पड़ले भी लोग आप के इन्तिज़ार में थे आप के वसीले से दुआओ कुबूल होती थी, लोग मांगा करते थे और पाते थे और बिगैर मांगे भी अल्लाह देता था, देता है और नबी के सफ़डे में देता रहेगा और येह भी साबित हुवा अल्लाह तआला के मक़बूल बन्दों का वसीला पकणना जाईज है और येह भी साबित हुवा के वहाबिया जो वसीले के मुन्किर है वोह झूटे है.

अल्लाह पाक फ़रमाता है : मुअ से मांगो

दुआ मोमिन का हथियार है, दुआ इबादत का मज्ज है, दुआ बन्दे को अपने रब से मिला देती है. मगर दुआ की कुबूलियत की कुछ शर्त भी है. हराम रिज़्क जाने वाले की दुआ कुबूल नहीं होती, दुआ करने से पड़ले कुछ नेक अमल भी करना चाहिये.

अल्लाह तआला की हम्दो सना करनी याहिये, दुआ से पहले और दुआ के बाद सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर दुइद पढना याहिये और कुबूलियत के यकीन के साथ दुआ करनी याहिये, अपने लिये अपने पीर, अपने मां बाप से दुआ करानी याहिये और नबिये पाक और औलियाअे किराम के वसीले से दुआ की जाअे तो जल्दी और जइर कुबूल होने के ईम्कानात है. अल्लाह तआला भुद इरमाता है : मुज से मांगो में अता कइंगा. जैसा के पारह 2 सूअे अल बकरह आयत नं 186 में अल्लाह पाक इरमाता है :

तर्जमा : ओ मलबूब ! जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुम से पूछे तो कछो के मैं करीब हूं पुकारने वाले जब मुझे पुकारे तो मैं उन की दुआ कुबूल करता हूं तो उन को याहिये के मुज से दुआ करे और मेरा हुकम माने के वोह राह पाअे.

भुद रबबे करीम हम से इरमाता है के “मुज से मांगो मैं तुम से करीब हूं, मैं अता कइंगा” बन्दे के लिये इस से बढ कर कौन सी भुश भबर हो सकती है ? मगर सुवाल येह पैदा होता है के हम को अपनी दुआओं का असर क्यूं नजर नहीं आता ? तो इस का जवाब येह है के वैसे तो हर दुआ कुबूल हैं मगर वोह कभी अल्लाह तआला के इज्जल से झिल झीर (तुरंत) होती है और कभी ताभिर से होती है. कभी बन्दे की हाजत दुन्या में पूरी कर दी जाती है तो कभी वोह दुआ बन्दे के हक में तौशअे आभिरत बना दी जाती है और उस का अज्जो सवाल आभिरत में दिया जाता है कभी बन्दे पर आने वाली बलाअे दूर हो जाती है कभी बन्दे का झईदा दूसरी चीज में होता है वोह अता किया जाता है.

कभी अैसा भी होता है के बन्दा अल्लाह तआला का मकबूल होता है तो उस की हाजत रवाई में इस लिये देर होती है ताके वोह दुआ में मशगूल रहे कभी कभी अैसा भी होता है के बन्दे में सिद्की ईप्वास की कमी होती है इस लिये दुआ कुबूल नहीं होती कभी

બન્દા એસી ચીઝ કા સુવાલ કર બૈઠતા હૈ જો ઉસ કે હક મેં બુરા હોતા હૈ ઇસ લિયે દુઆ કુબૂલ નહીં હોતી.

હરામ રિઝ્ક ખાને વાલે કી દુઆએ ભી કુબૂલ નહીં હોતી.

જૈસા કે પારહ 2 અલ બકરહ આયત નં 196 જબ નાઝિલ હુઈ ઔર અલ્લાહ પાક ને ફરમાયા કે ઝમીન મેં જો કુછ હલાલ ઔર પાકીઝા હૈ ઉસે ખાઓ ઔર શૈતાન કે નક્શે કદમ પર ન ચલો.

સચ્ચિદુના ઇબ્ને અબ્બાસ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ફરમાતે હૈ કે જબ મેં ને યેહ આયત સરકારે દો આલમ કે સામને તિલાવત ફરમાઈ તો હઝરતે સા'દ બિન અબી વક્કાસ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ને ફરમાયા : યા રસૂલલ્લાહ **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! મેરે હક મેં દુઆ ફરમાએ કે અલ્લાહ મુઝે “મુસ્તજાબુદ્દા'વાત” બના દે યા'ની મેરી હર દુઆ કુબૂલ હો તો સરકાર **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ને ફરમાયા : ઐ સા'દ ! અપની ખુરાક પાક કરો, કસમ હૈ ઉસ ઝાત કી જિસ કે કબ્જે મેં મુહમ્મદ (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**) કી જાન હૈ આદમી અપને પેટ મેં એક લુકમા હરામ કા ડાલતા હૈ તો ચાલીસ (40) દિન તક કુબૂલિયત સે મહરૂમ હો જાતા હૈ. મા'લૂમ હુવા કે હરામ રિઝ્ક ખાને વાલે કી દુઆ કુબૂલ નહીં હોતી.

યેહ ભી દેખા ગયા કે આદમી બલા યા મુસીબત આને પર અપને કો કોસતા હૈ. જૈસે કહતા હૈ : અલ્લાહ મુઝે મૌત દે યા અપને માલ ઔર ઔલાદ કે હક મેં બદ દુઆ કરતા હૈ અબ અગર અલ્લાહ વોહ દુઆએ કુબૂલ કર લે તો વોહ હલાક હો જાએ. અસ્લ બાત યેહ હૈ કે દુઆ કરને વાલા પહલે અપને ગુનાહોં સે તૌબા કરે, ફિર દિલ કી હુઝૂરી કે સાથ ઔર ઇખ્લાસ ઔર કુબૂલિયત કે યકીન કે સાથ દુઆ કરે નાજાઈઝ ચીઝેં ન માંગે ઔર યેહી વજહ હૈ કે લોગ મકબૂલાને બારગાહ કે આસ્તાનોં પર જા કર દુઆએ માંગા કરતે હૈ.

આખિર મેં હઝરત શૈખુલ ઇસ્લામ વલ મુસ્લિમીન કે યેહ અલ્ફાઝ યાદ રખે :

જો બે અસર હો કે રહ ન જાએ
દરાઝ વોહ દસ્તે ઈલ્તિજા કર
દુઆ સે કબ રોકતા હૂં મેં તુઝે
મગર સમઝ બુઝ કર દુઆ કર

તોબા ઓર નદામત સે ગુનાહ મિટા દિયે જાતે હે

અલ્લાહ તઆલા અપને પાકીઝા કલામ મેં હમ ગુનહગારોં કો ગુનાહોં સે પાક હોને કા નુસ્ખા બતા રહા હે. યેહ નુસ્ખા કોઈ નુસ્ખા નહીં બલ્કે એક કીમિયા હૈ જો લોહે કો સોના બના દેતા હૈ યા'ની કે ગુનહગાર કો પારસા બના દેતા હૈ. જૈસા કે રબ્બે કાએનાત પારહ 4 સૂરએ આલે ઈમરાન આયત નં 135 મેં ફરમાતા હૈ :

તર્જમા : જબ કોઈ બેહયાઈ યા ગુનાહ કર કે અપની જાનોં પર ઝુલ્મ કર બૈઠે ઓર અપને ગુનાહોં કો યાદ કર કે (નાદિમ હો કર) અલ્લાહ સે મુઆફી યાહે ઓર જાન બુઝ કર અપને ગુનાહોં પર અળ ન જાએ તો કૌન હૈં અલ્લાહ કે સિવા જો ગુનાહ બપ્શે ?

સચ્ચી તૌબા કી ત્રીન (3) શરાઈત હૈં : (1) અપને ગુનાહોં કા ઈકરાર (2) ગુનાહોં પર નાદિમ હોના ઓર (3) આઈન્દા અબ ગુનાહ ન કરને કા પકકા ઈરાદા કરના.

જબ બન્દે મેં યેહ ચીઝ પાઈ જાતી હૈ તો અલ્લાહ ખુશ હોતા હૈ ઓર બન્દે કો ઝરૂર મુઆફ કરતા હૈ, અબ ઐસે તૌબા કરને વાલોં કે લિયે યકીનન જન્નત હૈ.

તિહાન એક ખુર્મા ફરોશ (ખજૂર બેચને વાલા દુકાનદાર) થા ઉસ કે પાસ એક ઓરત ખજૂરે ખરીદને આઈ તિહાન ને કહા કે યેહ ખુર્મે તો અચ્છે નહીં હૈ અચ્છે ખુર્મે મકાન કે અન્દર કે હિસ્સે મેં હૈ ઈસી બહાને સે વોહ ઓરત કો અન્દર લે ગયા ઓર પકળ કર ઉસ સે લિપટ ગયા ઓર મુંહ યુમ લિયા (બોસા દિયા) ઓરત ને કહા : ખુદા સે ડર ! યેહ સુનતે હી વોહ ડર ગયા ઓર ઉસ ઓરત કો ઘોળ દિયા બહુત શર્મિન્દા હુવા ઓર નબિયે રહમત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કી

बारगाह में हाज़िर आ कर अपना हाल बयान किया. इस पर येह मुबारक और मुज्ददा देने वाली आयत नाज़िल हुई.

और एक रिवायत येह है के एक अन्सारी और एक सक्फ़ी दोनों दोस्त थे दोनों में मलबबत थी और एक दूसरे को भाई बनाया था सक्फ़ी जिहाद में गया और अपने मकान की निगरानी अपने अन्सारी भाई को सोंप कर गया. एक दिन अन्सारी गोशत लाया जब सक्फ़ी की औरत ने गोशत लेने के लिये दरवाज़े के बाहर हाथ निकाला तो हाथ पकण कर युम लिया और युमते ही उस को शर्मिन्दागी हुई और वोह जंगल में चला गया सर पर जाक डाली और मुंड पर तमाये मारे और बहुत रोया.

सक्फ़ी जब जिहाद से वापस आया उस ने अपनी बीबी से अन्सारी का हाल जानना चाहा बीबी ने वाकिआ बयान किया और कहा : अल्लाह ऐसा भाई किसी को न दे. अन्सारी पहाणों में रोता और तौबा अस्तग़फ़ार करता फिरता था. सक्फ़ी ने उसे धुंडा और तलाश कर के रसूले मक़बूल की बारगाह में ले आया और उस के हक में येह आयत नाज़िल हुई.

अल मुप्तसर गुनाहों पर शर्मिन्दा होना और आर्धन्दा गुनाह न करने का पकका इरादा करना ईन्सानों के गुनाहों को मिटा देता है. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ**

तौबा किस की कुबूल, किस की ना कुबूल ?

अल्लाह तबारक व तआला पारह 4 सूरे अे निसा आयत नं 17-18 में इरमाता है :

वोह तौबा जिस का कुबूल करना अल्लाह तआला ने अपने इज़्ज़ल से अपने जिम्मअे करम पर ले लिया हैं वोह उन्हीं की हैं जो नादानि से बुराई कर बैठे और तौबा में जल्दी करे ऐसों पर अल्लाह अपनी रहमत से रुजूअ इरमाता है और अल्लाह ईल्मो हिकमत वाला है और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते है

યહાં તક કે જબ ઉન મેં સે કિસી કો મૌત આએ તો કહે કે અબ મેં ને તૌબા કી ઔર ન કાફિર મરને વાલોં કી, ઉન કે લિયે હમ ને દર્દનાક અઝાબ તય્યાર કર રખા હૈ.

યાદ રહે અલ્લાહ પર કુછ ભી વાજિબ નહીં હૈ વોહ યાહે તો અપને બન્દે કો બિગૈર તૌબા મુઆફ કર દે ઔર યાહે તો તૌબા કુબૂલ કરે, યાહે તો તૌબા કુબૂલ ન કરે, બન્દે કો યાહિયે કે વોહ હમેશા અપને રબ સે ડરતા રહે ઔર અપને ગુનાહોં પર નાદિમ રહે, અસ્તગફાર કરતા રહે.

મુસલમાન યાહે કિતના હી બળા ગુનહગાર હો, યાહે ગુનાહે કબીરા કરને વાલા હો તો ઉસ કે લિયે ભી હમેશા કી જહન્નમ નહીં હૈ. અલ્લાહ યાહે બિગૈર સઝા દિયે મુઆફ કરે, યાહે તૌબા કુબૂલ કરે, યાહે અઝાબ કરે બા'દ મેં જહન્નમ સે નિકાલા જાએ. યેહ અલ્લાહ તઆલા કી મશિયત પર હૈ. જૈસા કે પારહ 5 સૂરએ નિસા આયાત નં 48 મેં ફરમાયા ગયા :

તર્જમા : અલ્લાહ તઆલા ઉસે નહીં બખ્શતા કે ઉસ કે સાથ કુફ કિયા જાએ ઔર કુફ ઔર શિર્ક કે સિવા જો કુછ હૈ જિસ કો યાહે મુઆફ કર દે ઔર જિસ ને ખુદા કા શરીક ઠહરાયા ઉસ ને ગુનાહ કા બળા તુફાન બાન્ધા.

ઔર ફરમાતા હૈ સૂરએ નિસા આયત નં 116 મેં કે

તર્જમા : અલ્લાહ ઉસે નહીં બખ્શતા કે ઉસ કા કોઈ શરીક ઠહરાએ ઔર ઉસ કે સિવા જો કુછ હૈ જિસે યાહે મુઆફ કર દેતા હૈ ઔર જો અલ્લાહ તઆલા કા કિસી કો શરીક ઠહરાએ વોહ દૂર કી ગુમરાહી મેં પળા.

હઝરતે ઈબ્ને અબ્બાસ رضي الله تعالى عنهم ફરમાતે હૈ કે યેહ આયત એક બહુત હી બૂઢે ઝઈફ આ'રાબી કે હક મેં નાઝિલ હુઈ કે જિસ ને સરકારે દો આલમ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم કી ખિદમતે બા બરકત મેં આ કર અર્ઝ કિયા : યા રસૂલલ્લાહ ! મેં બૂઢા હું ગુનાહોં મેં ડૂબા હુવા હું

भात येह है के जब से मैं ने अल्लाह को पहचाना और मैं ईमान लाया तब से आज तक शिर्क न किया. सिवाये अल्लाह के किसी को वाली न बनाया जिन बुझ कर कभी गुनाह न किया, मैं ने ओक पल भी येह न सोया के मैं अल्लाह से भाग सकता हूँ या रसूलल्लाह ! अपने गुनाह पर शर्मिन्दा हूँ, तौबा करता हूँ मगफिरत याहता हूँ, सोयता हूँ अल्लाह के यहाँ मेरा क्या हाल होगा ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई.

इस आयत से साबित हुवा के शिर्क तो न बप्शा जायेगा अगर वोह शिर्क पर मरे. हां अगर मुश्रिक तौबा करे तो बप्शा दिया जायेगा, ईमान ले आये.

हुजूर के वसीले से उम्मतियों की दुआ का कुबूल होना

बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में हुजूर पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वसीले से दुआओ कुबूल होती है और गुनाह मिटते है आप की शफ़ाअत मकबूल है, यहाँ तक की भुद अल्लाह तबारक व तआला हमें इस बात का हुक्म देता है : जैसा के कुरआने करीम पारह 5 सूरे अे निसा आयत नं 64 में है :

तर्जमा : और अगर वोह अपनी जानों पर जुल्म कर बैठे तो अै महबूब ! वोह आप की बारगाह में हाज़िर हो और अल्लाह से मुआफ़ी याहे और अगर रसूल उन की शफ़ाअत इरमाये तो उज़र वोह अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल इरमाने वाला पाअेंगे.

यहाँ पर भुद ज़ालिके काअेनात हम को ता'लीम दे रहा है के अै मेरे बन्दो ! अगर तुम से गुनाह सरजद हो जाये और अगर तुम याहते हो के अल्लाह तुम्हें मुआफ़ करे तो तुम रसूलुल्लाह की बारगाह में हाज़िर हो और उन को मेरी बारगाह में अपना वकील बनाओ अगर रसूल सिफ़ारिश करेंगे तो मैं तुम्हें मुआफ़ कर दूंगा.

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या मकाम है मकामे मुस्तफ़ा سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

સરકારે દો આલમ **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** કી વફાત શરીફ કે બા'દ એક આ'રાબી રોઝએ અક્દસ પર હાઝિર હુવા ઔર કબ્ર શરીફ કી ખાક સર પર ડાલી ઔર અર્ઝ કી : યા રસૂલલ્લાહ ! જો આપ ને ફરમાયા વોહ હમ ને સુના ઔર ઉસ મેં યેહ આયત ભી હૈ : વલવ અન્નહૂ ઈઝ-ઝલમુ... બેશક ! મુઝ સે ખતા હુઈ મેં ને અપને આપ પર ઝુલ્મ ક્રિયા ઔર મેં અપને ગુનાહોં કી મુઆફી કે લિયે આપ કે પાસ હાઝિર હુવા આપ મેરે રબ સે મેરે ગુનાહ કી મુઆફી દિલવાઈયે, તો રોઝએ મુબારક સે આવાઝ આઈ “તેરી બખ્શિશ કરને મેં આઈ” ઈસ સે સાબિત હુવા :

(1) અલ્લાહ તઆલા કી બારગાહ મેં ઉસ કે મકબૂલોં કો વસીલા બનાના જાઈઝ હૈ ઔર કામિયાબી કા ઝરીઆ હૈ.

(2) કબ્ર પર હાજત કે લિયે જાના યેહ “જાઊકા” મેં દાખિલ હૈ.

(3) વફાત શરીફ કે બા'દ ભી મકબૂલાને બારગાહ કો “યા” સે નિદા કરના જાઈઝ હૈ.

(4) નેક બન્દે વફાત કે બા'દ ભી મદદ કરતે હૈ.

(5) ઔર યેહ ભી સાબિત હુવા કે વહાબિયા જો વસીલે કા ઈન્કાર કરતે હૈ યા વસીલે સે દુઆ માંગને કો શિર્ક કહતે હૈ વોહ સબ ઝૂટે હૈ. યહાં ખુદ અલ્લાહ તઆલા રસૂલે મકબૂલ **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** સે કહતા હૈ. આપ ઈન કે લિયે સિફારિશ કરો. આપ કી સિફારિશ મકબૂલ હૈ. **سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ**

દુઆ આહિસ્તા ઔર ગિળગિળા કર માંગો

અલ્લાહ પાક હમેં દુઆ કરને કા તરીકા બતા રહા હૈ કે મુઝ સે દુઆ કિસ અન્દાઝ મેં કિસ તરીકે સે માંગી જાએ. જૈસા કી કુરઆને કરીમ પારહ 8 સૂરએ આ'રાફ આયત નં. 55 મેં ફરમાતા હૈં કે :

તર્જમા : ઐ લોગો ! અપને રબ સે દુઆ કરો ગિળગિળા કર ઔર આહિસ્તા યા'ની ધીમી આવાઝ સે. બેશક ! હદ સે બઢ જાને

વાલે ઉસ કો પસન્દ નહીં ઝમીન કે સંવર જાને કે બા'દ ઉસ મેં ફસાદ ન ફૈલાઓ ઓર ઉસ સે ડરતે ઓર ઉસ સે ઉમ્મીદ રખતે (દુઆ કરો) બેશક ! અલ્લાહ કી રહમત નેકોં કે કરીબ હૈ.

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ખુદ ખાલિકે કુલ માલિકે કુલ હમ બન્દોં કો દુઆ કરને કા તરીકા સિખા રહા હૈ કે મુઝ સે ઈસ તરહ માંગો. ઐ બન્દો ! અલ્લાહ તઆલા કે સામને આજિઝ બન કર રો રો કર ગિળગિળા કર દુઆ માંગો. ઓર દુઆ મેં ચીખના ચિલ્વાના છોળો. યાદ રખો તુમ કિસી દૂર વાલે કો નહીં પુકારતે હમારા રબ કરીબ હૈ.

અબ ઈસ આયત સે વોહ લોગ સબક હાસિલ કરે જો દુઆઓં મેં ઝોર ઝોર સે ચિલ્વાતે હૈ, માર્ઈક મેં દુઆ કરતે હૈ વોટ્સએપ પર દુઆ કી જાતી હૈ. જૈસે મખ્લૂક સે મુનાજાત કરતે હૈ ઓર ખાલિક કો ભુલા બૈઠે હૈ ઓર યેહ ભી મા'લૂમ હુવા કે કુબૂલિયત કે યકીન કે સાથ દુઆ કી જાએ.

હઝરતે હસન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કા કૌલ હૈ કે આહિસ્તા દુઆ કરના યેહ એ'લાનિયા દુઆ કરને સે સત્તર (70) દરજા અફઝલ હૈ દુઆ મોમિન કા હથિયાર હૈ. દુઆ બેહતરીન ઈબાદત હૈ ઓર એક અચ્છી બાત યેહ ભી હૈં કે અપને લિયે દુઆ કરને વાલા અપને દૂસરે મોમિન ભાઈયોં કે લિયે ભી દુઆ માંગે.

દુઆ કરતે વક્ત યેહ ભી ખયાલ રહે કે કિસી નાજાઈઝ અમ્ર કે લિયે દુઆ ન કી જાએ અપને અમલ કા સિલા ન માંગે ક્યૂંકે હમારે અમલ મેં વોહ કમાલ નહીં, ઉસ સે ઉસ કા ફઝ્લ માંગે હમ હમારી હૈસિયત કે મુતાબિક અમલ કરતે હૈ ઉસ સે ઉસ કા ફઝ્લ માંગે વોહ અપની શાન સે અતા કરેગા. જૈસા કે એક શાયર ને કહા હૈ :

તેરી ઈબાદત કે ઈવઝ મેં મેં ભી કુછ માંગૂ યેહ મુઝે મન્ઝૂર નહીં
મેં ભી તેરા બન્દા હૂં કોઈ મઝદૂર નહીં

યાદ રહે મઝદૂરી માંગોગે તો મઝદૂરી મિલેગી ઓર યેહ ભી હો સકતા હૈ કે હમારી ઈબાદત રદ કર દી જાએ, હમારે મુંહ પે

માર દી જાએ, હમ અપની ઈબાદત કો મજદૂરી ન સમજે. ક્યૂંકે ઈબાદત કી તૌફીક મિલના યેહ રબ કા એહસાન હૈ જબ તુમ ઉસ કા ફઝ્લ તલબ કરોંગે તો વોહ તુમ્હેં વોહ ભી દેગા જિસ કે તુમ લાઈક હો ઔર વોહ વોહ ભી દેગા જો ન તુમ ને માંગા. બે શુમાર અતા કરેગા.

હઝરતે શૈખુલ ઈસ્લામ ફરમાતે હૈ :

જો બે અસર હો કર રહ ન જાએ દરાઝ વોહ દસ્તે ઈત્તિજા કર દુઆ સે કબ રોકતા હૂં મેં તુજે મગર સમઝ બુઝ કર દુઆ કર

હમ પર અઝાબ ક્યૂં નહીં આતા ?

હમારી બદ આ'માલિયા ઔર નાફરમાનિયાં ઈતની બઢ ગઈ હૈ જિસ કી કોઈ લિમીટ નહીં અગલી કૌમોં ને જો ઔર જિતને બુરે કામ કિયે થે વોહ સબ હમ મેં મૌજૂદ હૈ મગર ફિર ભી હમ બયે હુએ હૈ. મગર ક્યૂં? ઔર ઈન્તિહા કી બાત તો યેહ કે હયાતે રસૂલે મકબૂલ મેં નઝર ઈબને હારિસ ઔર ઉસ જૈસે કુછ લોગ યેહ દુઆએ કરતે થે કે અગર મુહમ્મદ (ﷺ) જો લે કર આએ વોહ (કુરઆન) સય હૈ ઔર વોહ તેરી તરફ સે હૈ તો હમ પર પથ્થરોં કી બારિશ બરસા **مَعَادَ اللَّهِ** તબ ભી અલ્લાહ ને આમ અઝાબ નાઝિલ નહીં કિયા યેહ ક્યૂં?

ઈસ કા જવાબ અલ્લાહ તઆલા ને યેહ પાકીઝા આયાત નાઝિલ કર કે દિયા પારહ 9 સૂરએ અન્ફાલ આયાત નં. 33

તર્જમા : યેહ અલ્લાહ કા કામ નહીં હૈ ઐ મહબૂબ ! હમ ઉન પર અઝાબ નાઝિલ કરે જબ તક આપ ઉસ મેં મૌજૂદ હો ઔર અલ્લાહ તઆલા ઉન પર અઝાબ ભેજને વાલા નહીં જબ તક વોહ તૌબા અસ્તગફાર કર રહે હૈ.

યેહ ઈસ લિયે કે રસૂલ રહમતુલ્લિલ આલમીન હૈ ઔર યેહ ભી કે સુન્નતે ઈલાહિયા હમેશા સે યેહ રહી કે જબ તક કિસી કૌમ મેં ઉસ કા રસૂલ મૌજૂદ હો તબ તક ઉસ કૌમ પર આમ તબાહી વ

बरबादी का अजाब नहीं नाज़िल इरमाता. जिस के सबब से सब बरबाद हो जाये और कोई न बचे. और फिर यह भी बताया गया के जब तक कौम में तौबा अस्तग़फ़ार करने वाले इमान वाले मौजूद हो तब तक आम अजाब वोह न भेजेगा आज कल जो कौमे मुसलमानों से थीवती है. वोह नहीं जानते के मुसलमानों के तौबा करने वालों के सबब से ही वोह बचे हुए है.

मजकूर बाबा इरशाद में अल्लाह तआला ने दो अमानों का जिक्र इरमाया : अेक है नबिये करीम का ज़ाहिरि वुजूद मस्जिद और दूसरी इमान वालों का अस्तग़फ़ार करना या'नी मुआझी मांगना. नबिये करीम का रईके आ'ला से मिलने के बा'द वोह अमान तो अब न रही लेकिन दूसरी अमान या'नी के मोमिन का वुजूद और उन का अस्तग़फ़ार. तो यह कियामत तक रहेगी ऐसे यूं भी कहा जा सकता है के नबिये करीम के गुलामों का वुजूद जब तक है आम अजाब आने वाला नहीं है कोई जमाना न इमान वालों से पाली होगी न तौबा करने मुआझी मांगने वालों से पाली होगी और जब ऐसी सूरते हाल हो जायेगी के दुन्या में कोई इमान वाला न रहे तब तो कियामत आ जायेगी.

तौबा करने वालों की पाकीज़ा जिन्दगी (मताये हसन)

कुरआने करीम पारह 11 सूरे अे हूद आयत नं. 3 में अल्लाह पाक इरमाता है :

तर्ज़मा : अपने रब से मुआझी मांगो फिर उस की तरफ़ तौबा करो वोह तुम्हें (दुन्यवी जिन्दगी में भी) अेक मुकरर वक्त तक बहुत अच्छा भरतने देगा और इज़ीलत वाले को उस का इज़्ज़ल पहुंचायेगा और अगर (तुम ने तौबा न की) तुम ने मुंड़ कैर लिया तो मुझे तुम पर बणे दिन (कियामत) के अजाब का भौंफ़ है.

यह वा'दा है अल्लाह के पैग़म्बर सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام का और यह वा'दा है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का के अगर तुम ने

તૌબા કી તો વોહ તુમ્હેં મતાએ હસન અતા કરેગા. મતાએ હસન ક્યા હૈ ? તો રિવાયતોં મેં હૈ કે તુમ્હેં ઝિન્દગી બસર કરને કા અચ્છા સામાન દેગા યા'ની લખ્બી ઉમ્મ, ઐશો ઈશરત, નેક ઔલાદ ઔર બ કસરત ફાઈદે દેગા મા'લૂમ હુવા કે ઈખ્લાસ કે સાથ સબ્ર ઔર સચ્ચી તૌબા કરના દરાઝિએ ઉમ્મ ઔર રિઝ્ક કી કસરત કે લિયે બેહતરીન અમલ હૈ.

દેખિયે કે તૌબા કરને વાલે કો ક્યા ક્યા ઔર કેસે કેસે ઈન્આમાત મિલતે હૈ, કૌમે હૂદ કી ના ફરમાનિયાં જબ હદ સે બઢ ગઈ તો અલ્લાહ તઆલા ને ઉસ કૌમ પર બારિશ બન્ધ કર દી ઔર કૌમ કી ઔરતોં કો બાંઝ કર દિયા, જબ યેહ લોગ બહુત ઝિયાદા પરેશાન હુએ તો ઉસ ઝમાને કે પૈગમ્બર હઝરતે હૂદ عَلَيْهِ السَّلَام ને કૌમ કો સમઝાયા. પારહ 12 સૂરએ હૂદ આયત નં. 52

તર્જમા : ઐ મેરી કૌમ ! અપને રબ સે મુઆફી યાહો ઔર ઉસ કી તરફ ઝુક જાઓ (અગર તુમ ઐસા કરોગે) વોહ તુમ પર ઝૌર કી બારિશ ભેજેગા, ઔર તુમ્હારી તાકતો કુવ્વત બઢાએગા ઔર તુમ ગુનાહ કી તરફ ન પલટો.

એક મરતબા સચ્ચિદુના ઈમામે હસન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ અમીરે મુઆવિયા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે પાસ તશરીફ લે ગએ તો અમીરે મુઆવિયા કે એક ખાદિમ ને આપ સે ઔલાદ ન હોને કી ફરિયાદ કી ઉસ ને કહા મેં માલદાર આદમી હૂં મગર મેરી કોઈ ઔલાદ નહીં હૈ મુઝે કોઈ ઐસા અમલ બતાઓ કે મુઝે અલ્લાહ ઔલાદ અતા કરે. આપ ને ફરમાયા : અસ્તગફાર પઢા કર. ઉસ ને કસરત સે અસ્તગફાર પઢના શુરૂઅ કિયા, વોહ રોઝાના સાત સૌ (700) મરતબા અસ્તગફાર પઢને લગા ઈસ કી બરકત સે અલ્લાહ તઆલા ને ઉસે દસ (10) બેટે અતા ફરમાએ.

જબ ઈસ બાત કી ખબર અમીરે મુઆવિયા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કો પહુંચી તો ઉન્હોં ને અપને નૌકર સે કહા કે “તૂને ઈમામ કો યેહ ક્યું

नहीं पूछा के येह अमल उन्हों ने कहां से लिया ?” जब उस फाटिम की धमाम से दोबारा मुलाकात हुई और जब उस ने धमाम से पूछा तो हजरत ने जवाब दिया : “क्या तूने हजरते हूद عَلَيْهِ السَّلَام का इरमान नहीं सुना ! यजीदकुम कुव्वतन ईला कुव्वतिकुम और हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का इरमान के युम्दीद कुम बि अम्वालिद-व बनीन.”

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ईस आयत से येह जानने मिला के कसरते रिज़्क व कसरते औलाद के लिये अस्तगफ़ार पढना कुरआनी अमल है.

दुआ में क्या न मांगे ?

ईन्सान पर जब कोई तकलीफ़ या आजमाईश का वक्त आता है तो वोह अेक दम बोभला जाता है और जो मन में आये बिगैर सोये समझे बोलने लगता है जुद अपने लिये अपने माल के लिये, औलाद के लिये बद दुआये करता है. येह बहुत बुरा है येह नहीं करना याहिये येह तो अल्लाह का बन्दों पर भास इज़्जल है के वोह ऐसी दुआये कुबूल नहीं करता बन्दा दुआ करता है अल्लाह हमे गारत करे कत्मी कइता है मौत दे, कत्मी औलाद के हक में गलत अल्फ़ाज़ युज़ करता है अगर ऐसी दुआये जल्द कुबूल हो जाती तो जुद हलाक हो जाता.

पारह 11 सूरे ये युनूस आयत नं 11 में है के

तर्जमा : और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ईतनी जल्दी भेजता जैसे वोह भलाई में जल्दी याहता है तो उन का वा'दा पूरा हो जाता मगर अल्लाह तआला अपने करम से बन्दों की वोह दुआ (बद दुआ) कुबूल नहीं करता.

और अल्लाह पाक इरमाता है पारह 15 सूरे ये बनी ईसराईल आयत नं 11 में के आदमी बुराई की जल्दी करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बणा जल्द बाज़ है. याहिये तो येह के आदमी अपने हर काम में आहिस्तगी अपनाये ताके नुकसान से बचा रहे.

बेशक ! नेकियां बुराईयों को मिटा देती हैं

नेकियां गुनाहे सगीरा के लिये कफ़ारा बन जाती हैं या'नी के गुनाहों को मिटा देती हैं याहे वोह नेकी नमाज़ हो याहे सदक़ात व भैरात या ज़िको अज़कार या किसी मज़लूम की हाज़त रवा'ई या अपने गुनाहों पर नदामत या और कुछ भी नेकी हो.

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है के पांचो नमाज़ें, अक़ जुमुआ से दूसरे जुमुआ तक और अक़ रिवायत में है के अक़ रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक येह सब कफ़ारा है जब के ईन्सान गुनाहे कबीरा से भये, गुनाहे कबीरा के लिये तौबा ज़रूरी है.

अक़ शप्स ने किसी औरत को देखा और उस से कुछ नाशा'ईस्ता (अयोग्य) हरकत हुई उस पर वोह नादिम हुआ और सरकारे दो आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में हाज़िरे बिदमत हुआ और अपना हाल बयान किया तो येह आयत नाज़िल हुई.

पारह 12 सूरे अहद आयत नं 114

तर्जमा : बेशक ! नेकियां बुराईयों को मिटा देती हैं येह नसीहत हैं उन के लिये जो माने.

जब येह मुबारक आयत नाज़िल हुई तो उस बन्दे ने सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से सुवाल किया के या रसूलव्वाह ! येह पुश ખબरी ખાસ મેરે લિયે હૈ યા સબ કે લિયે હૈ ! ફરમાયા : સબ કે લિયે. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** अगर आदमी अपने गुनाहों पर नादिम हो, दो आंसू बहा ले हिल में भौंफ़े भांये और नेकियां करे तो ज़रूर बिल ज़रूर अल्लाह पाक बन्दे के गुनाह को मिटा देता है.

पताकारों का बुगुर्गो के वसीले से दुआ कराना

जब यूसूफ़ **عَلَيْهِ السَّلَام** के भाई लोगों को अपने किये पर नदामत हुई और जब सय्यिदुना यूसूफ़ **عَلَيْهِ السَّلَام** ने इर्राफ़ि हिली से अपने भाईयों को मुआफ़ कर दिया तो सब ने अपने मोहतरम वालिद हज़रत याकूब **عَلَيْهِ السَّلَام** से अर्ज़ की, के आप अल्लाह तआला से

हमारे गुनाहों की मुआफी दिलवाएँ अल्लाह तआला ने इस वाक़िअे को कुरआने करीम में इस तरह बयान फ़रमाया : पारह 13 सूरेअे यूसुफ़ आयत नं. 97 और 98 में

तर्जुमा : ओले अै हमारे बाप ! हमारे गुनाहों की मुआफी मांगिये बेशक ! हम ખताकार है फ़रमाया (हज़रते याकूब عَلَيْهِ السَّلَام ने) जल्द ही मैं अपने रब से तुम्हारी बख़्शिश मांगूँगा और बेशक ! वोही बख़्शने वाला महेरबान है.

मा'लूम हुवा के बुज़ुर्गों की बारगाह में छाज़िर हो कर अपने गुनाहों की मुआफी मांगना और अल्लाह पाक की बारगाह में उन को अपने लिये वसीला और सिफ़ारिश करने वाला बनाना येह कुरआन से साबित है और सुन्नते साविहीन है.

अगर अल्लाह मोहलत न देता तो क्या होता ?

आदमी गुनाह करता रहता है और तौबा में ताबिर करता रहता है फिर भी अल्लाह तआला बन्दों पर महेरबानी करता है और ढील देता है, येह इस लिये के बन्दा तौबा करे अगर बन्दे को गुनाहों पर फ़ौरन पकण करता तो शायद ज़मीन पर चलने वाले में से सारे बन्दे हलाक हो जाते और कोई न बयता सिवाअे अहलुल्लाह के जो थोणे है. जैसा के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने करीम पारह 14 सूरेअे नडल आयत नं. 61 में फ़रमाता है :

तर्जुमा : और अगर अल्लाह तआला लोगों को उन के गुनाहों के सभब गिरिफ़्त (पकण) कर लेता तो ज़मीन पर चलने वाला कोई न छोणता लेकिन उन्हे अेक मुकर्रर वा'दे तक मोहलत देता है फिर जब उन का वा'दा आ जाअेगा तो न अेक घणी पीछे रहे न अेक घणी आगे.

येह अल्लाह तआला की शाने करीमी हैं के वोह कुदरत के बा वुजूद अज़ाब देने में जल्दी नहीं करता और येह भी बन्दे की बद आ'मादिया व जसारत (मुर्जाई) है के वोह अल्लाह का मिलना

यकीनी जानते हुअे भी तौबा में जल्दी नहीं करता. येह कितनी बणी गलती है की ખુદ कमजौर હોते हुअे अल्लाह तआला से लणाई लेता हैं.

હઝરતે રાબિઆ બસરિયા **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** سے કિસી ને પૂછા કે ક્યા અલ્લાહ બન્દે કી તૌબા કુબૂલ કરતા હૈ ? તો આપ ને ફરમાયા : જબ તક અલ્લાહ તઆલા બન્દે કો તૌબા કી તૌફીક નહીં દેતા તબ તક બન્દા તૌબા કર હી નહીં સકતા ઔર જબ વોહ તૌફીક દેતા હૈ તો ઝરૂર વોહ કુબૂલ ભી કરતા હૈ લિહાઝા બન્દે કો યાહિયે કે વોહ અલ્લાહ સે તૌફીક માંગે ઔર ફિર તૌબા કરને મેં જલ્દી કરે ઈસ સે પહલે કી મૌત આ જાએ.

અલ્લાહ સે તૌફીક માંગે જૈસે અલ્લાહ કે બરગુઝિદા બન્દોં પૈગમ્બર સુલૈમાન **عَلَيْهِ السَّلَام** ઔર હઝરતે સચ્ચિદુના સિદીકે અકબર **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ને માંગી. જિન કા ઝિક આગે આ હી રહા હૈ સારે મકબૂલાને બારગાહ તૌબા કરતે થે ઔર નેક આ'માલે સાલિહા કી તૌફીક અપને રબ સે માંગા કરતે થે.

દ્વાઆએ હઝરતે સુલૈમાન **عَلَيْهِ السَّلَام**

કુરઆને કરીમ પારહ 19 સૂરઅે નમ્લ આયત નં 19 મેં હૈ કે હઝરતે સુલૈમાન **عَلَيْهِ السَّلَام** ને ઈસ તરહ દ્વાઆ ફરમાઈ :

તર્જમા : અર્ઝ કી ઐ મેરે રબ ! મુઝે તૌફીક દે કે મેં તેરે ઉન એહસાનોં કા શુક અદા કરું જો તૂને મુઝ પર ઔર મેરે માં બાપ પર ક્રિયે ઔર યેહ કે મેં વોહ અચ્છે કામ કરું જો તુઝે પસન્દ હો ઔર અપની રહમત સે મુઝે ઉન બન્દોં સે મિલા (ઉન બન્દોં મેં શામિલ કર) જો તેરે કુર્બે ખાસ કે લાઈક હૈ.

ઔર આપ ફરમાતે હૈ કે જો શુક કરે વોહ અપને હી ભલે કો શુક કરતા હૈ ઔર જો કોઈ નાશુકી કરે તો મેરા રબ સબ સે બે પરવાહ હૈં સારી ખૂબિયાં ઉસ કે લિયે ઔર સારી ભલાઈ કા ઝાહિર કરને વાલા.

तौबा करने वालों पर बर्नाम (बर्ना करम)

कुरआने करीम पारह 19 सूरेअे कुरकान आयत नं. 70 में

है के

तर्जमा : जे तौबा करे और ईमान लाअे और नेक अमल करे तो अैसों की बुराईयों को अल्लाह तआला नेकियों से बदल देगा और अल्लाह बप्शने वाला महेरबान है.

यन्द लोग रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में छाजिर आअे और अर्ज किया : हम ने बणे बणे गुनाह किये है क्या हम ईमान ले आअे तो आप का रब हमारे गुनाह मुआफ़ कर देगा ? सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उन्हें बताया और अल्लाह ने येह भुश भबरी सुनाई या'नी तौबा करने वाले को अल्लाह नेकी की तौफ़ीक देगा और उस के गुनाह मिटा देगा. जिन जिन लोगों ने सख्खी तौबा की और वोह हैं मुसलमान जे अपनी बीती हुई जिन्दगी के गुनाहों को याद कर के मुआफ़ी मांगे और आईन्दा गुनाह न करने का पक्का ईरादा करे और अब नेक आ'माल करे तो जैसा के :

हदीस शरीफ़ में है के रोजे कियामत अेक शप्स छाजिर किया जाअेगा फिरिश्ते अल्लाह तआला के हुकम से फिरिश्ते उस के छोटे गुनाह (गुनाहे सगीरा) उस को गिनाते रहेंगे वोह ईकरार करता रहेगा और बणे गुनाहों के पैश डोने से डरता रहेगा उस के बा'द उस को कहा जाअेगा तेरे हर अेक गुनाह के बदले तुजे अेक नेकी अता की गई येह इरमाते हुअे नबिये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के येहरे पर अल्लाह तआला और उस के शाने करम पर भुशी हुई और आप मुस्कुरा दिये.

और येह के अल्लाह तआला का ईन्आम है. सूरेअे जुमुआ में है :

तर्जमा : येह अल्लाह तआला का इज़्ज है वोह जिसे याहे अता करे. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

तौबा में जल्दी करना चाहिये

कुरआने करीम पारह 23, सूराये फ़ातिर आयत नं. 5 में है के

तर्जमा : ओ लोगो ! बेशक ! अल्लाह का वा'दा सय्या है तो हरगिज़ तुम्हें दुन्या की जिन्दगी धोका न दे और हरगिज़ तुम्हें बणा इरेबी शैतान धोका न दे.

अक्सर होता येह है के दुन्यवी लज़्ज़तों में डूब कर आदमी आभिरत को भूल जाता है और होता येह है के अक्सर इन्सान को शैतान येह तसव्वुर दिवाता है के अम्नी तो लम्बी उम्र बाकी है अम्नी अैश कर लो बा'द में तौबा कर लेना और फिर वोह येह त्मी कलता है के अल्लाह बणा करीम है मुआफ़ कर देगा, इब्लीस के इरेब में से येह बणा इरेब है के वोह तौबा में ताभिर करवाता और टालता है.

आदमी को तौबा करने में जल्दी करना चाहिये और शैतान के इरेब में न आना चाहिये कहीं अैसा न हो के अयानक मौत आ जाये और बिगैर तौबा ही मर जाये या कहीं अैसा न हो के अल्लाह बा'द में तौबा की तौफ़ीक ही न दे या छीन ले. अकलमन्द वोह है जो तौबा में जल्दी करे और अपनी दुन्या और आभिरत दोनो संवार ले.

गुनहगारो ! अल्लाह की रहमत से मायूस न हो

कुरआने करीम पारह 24 सूराये जुमर आयत नं. 53 में हैं के

तर्जमा : ओ महबूब ! तुम इरमा दो अै मेरे बन्दो ! जिन्हीं ने (गुनाह कर के) अपने उीपर जुल्म किया, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो. बेशक ! अल्लाह सारे गुनाह मुआफ़ कर देगा, बेशक ! वोही बप्शने वाला महेरबान है.

मुश्रिकीन में से यन्द् आदमी सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की भिदमते अकदस में छाजिर हुअे और उन्हों ने अर्ज किया के बेशक ! आप का दीन तो बहुत अच्छा है उक और सय्या है मगर हम से बणे बणे गुनाह सादिर हुअे है बहुत सी मा'सियतों (बुराईयों) में हम मुब्तला रहे क्या किसी तरह हमारे गुनाह मुआफ़ हो सकते है ? उस पर येह आयत नाजिल हुई और बताया गया के अल्लाह जरूर मुआफ़ कर देगा.

तौबा करने वालों के हक में इरिशतों की दुआअे

पारह 25 सूअे मुअमिन आयत नं. 7 में है के

तर्जमा : वोह इरिशते जो अर्श उठाते है और जो उन के ईद गिद है वोह अपने रब की हम्द के साथ उस की पाकी बयान करते रहते है और उस पर ईमान लाते है और गुनहगार मुसलमानों की मगफ़िरत याहते है कहते हैं औ हमारे रब ! तेरी रहमत और ईल्म हर चीज में समाई है तू उन्हे बफ़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हे दोज़भ के अजाब से बचा ले.

मलाईकअे हामिलीने अर्श जो कुर्बत और मन्ज़िलत में दूसरे मलाईका से अफ़जल है और उस के ईद गिद वाले या'नी उस के आस पास यारों तरफ़ जो इरिशते रहते है उन को "कर्रोबी" कहते है और जो मलाईका में साहिबे सियादत है और वोह सुब्खानल्लाहि व बिहम्दिही की तस्बीह करते है और अल्लाह पाक की वहदानियत की गवाही देते है वोह हम गुनहगार सियाहकारों के हक में अर्ज करते है. औ हमारे रब ! जिन्हों ने तौबा की तू उन की मगफ़िरत इरमा और येह भी कहते है के उन के बाप दादा बीवियों और औलाद में जो नेक और ईमान वाले है उन्हे भी उन से मिला या'नी जन्नत में दाखिल कर. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

गुनहगारों के हक में हुजुरे पाक की दुआ

कुरआने करीम पारह 24 सूरअे मोमिन आयत नं. 55 में

है के

तर्जमा : औ मलबूब ! सन्न करो. बेशक ! अल्लाह का वा'दा सय्या है और अपनों के गुनाहों की मुआफी याहो.

या'नी औ मलबूब ! अपने गुनहगार भासो आम मुसलमानों के गुनाहों की मुआफी मांगो. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

मुआफ़ करने वाला जुदा, हुक़्म देने वाला जुदा, और फिर किस को ? अपने मलबूब को और क्या हुक़्म ? जो तुम्हारे हैं उन के गुनाहों की मुआफी याहो, क्या अब भी जुदा मुआफ़ न करेगा ? अरे अगर मुआफ़ न करना होता तो हुक़्म ही नहीं देता ? यहाँ तक के सारे नबियों ने दुआ की, फिरिश्तों ने दुआ की जैसा के सूरअे मोमिन आयत नं. 7 में मजकूर हुवा और पारह 25 सूरअे शूरा आयत नं. 5 में है के

तर्जमा : फिरिश्ते अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते है और जमीन वालों के लिये मुआफी याहते है.

और एन सब के उपर येह के हमारे सरकार हुजूर नबिये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से इरमाया : अपनी उम्मत के लिये मगफ़िरत तलब करो के वोह तुम से उम्मीद रખते है.

युनाच्ये, आप हर रोज़ कम से कम सत्तर (70) भरतबा अस्तग़फ़ार इरमाते रहते थे और एस अन्दाज़ में उम्मत की ता'लीम व तरबियत इरमाते थे के आप की पैरवी करते हुअे वोह भी कसरत से अस्तग़फ़ार करे और या गफ़़ारो की तस्बीह पढते रहे और जब एस अमल की मुप्पिसाना साबित कदमी के नतीजे में अल्लाह तआला के इज़्लो करम से मगफ़िरत हासिल होगी तो वोह नबिये करीम ही की ता'लीमो तरबियत का समरा (इल) होगा और एसे नबिये करीम ही का बप्शवाना कहा जाओगा. **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

अल्लाह इरमाता है मुझ से मांगो में अता करेगा

पारल 24 सूरअे मुअमिन आयत नं 60 में है के

तर्जमा : और तुम्हारा रब इरमाता है मुझ से दुआ करो मैं कुबूल करूंगा.

तो अै लोगो ! अपने रब से सुवाल करो वोह अता करेगा क्यूंके वोह कल्मी वा'दा खिलाई नही करता उस के भजाने तरे हुअे है.

कुछ बेवुकूफ़ कहते है :

“दाता है भणा रज़ाक मेरा त्रपूर भजाने है उस के येह सय है मगर अै दस्ते दुआ हर रोज़ तकाज़ा कौन करे”

और अकलमन्द वोह है जो अपने रब से मांगे मगर कल्मी अपनी इबादत का बदला न मांगे जैसे :

तेरी इबादत के इवज में मैं ली कुछ मांगू येह मुझे मन्जूर नही में ली तो तेरा भन्दा हूँ कोई मजदूर नही

भस हम मजदूरी न मांगे, अमल का बदला न मांगे, उस से उस का इज़ल मांगे, करम मांगे अपने और अपने त्वाइयों के गुनाहों की मगफ़िरत मांगे पूरी उम्मत के लिये मांगे यहां तक के सय्यिदुना हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर कियामत तक आने वाले नेक और भद सारे मुसलमानों के लिये मांगे जब वोह दने में कन्जुस नही तो हम मांगने में क्यूं कन्जुस बने. जैसा के किसी शाईर ने क्या पूब कहा :

मैं ही नादां यन्द कलियों पे कनाअत कर गया

वरना गुलशन में इलाजे तंगिअे दामन ली था

बहुत मांगो, रोज़ मांगो, मगर समज बुज कर मांगो इप्लास व कुबूलियत के यकीन के साथ मांगो और हजरत शैबुल इस्लाम सय्यिद मुहम्मद मदननी अशरई खिलानी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ इरमाते है :

જો બે અસર હો કર રહ ન જાએ દરાઝ વોહ દસ્તે ઈલ્તિજા કર દુઆ સે કબ રોકતા હૂં તુઝે મગર સમઝ બુઝ કર દુઆ કર અરે જબ વોહ ખાલિકે કુલ માલિકે કુલ, રઝઝાકે હકીકી ખુદ દેને પર હૈ તો હમ લેને મેં ક્યૂં કન્જુસી કરે બસ યેહ કે સમઝ બુઝ કર માંગો.

દુઆએ હઝરતે સચ્ચિદુના સિદીકે અકબર رضي الله تعالى عنه

પારહ 26 સૂરએ અહકાફ આયત નં 15 મેં હૈ કે તર્જમા : અર્ઝ કી, કે ઐ મેરે રબ ! મેરે દિલ મેં ડાલ કે મેં તેરે ઉન એહસાનાત કા શુક કરું જો તૂને મુઝ પર ઔર મેરે માં બાપ પર ક્રિયે ઔર મેં વોહ નેક કામ કરું જો તુઝે પસન્દ આએ ઔર મેરી ઔલાદ મેં ભલાઈ રખ મેં તેરી હી તરફ રુજૂઅ લાયા ઔર મેં મુસલમાન હૂં.

અલ્લાહ કી ને'મતોં કા એ'તિરાફ કરના, ઔર ઉસ કા શુક બજા લાના યેહ ઈતની બળી ને'મત હૈ કે ઈસ સે ને'મતેં બઢતી હૈ ઔર અલ્લાહ દુઆએ કુબૂલ ફરમાતા હૈ તો ઈન બુઝુર્ગોં ને અલ્લાહ પાક સે દુઆ કર કે હમ કો દુઆ માંગને કા સલીકા સિખા દિયા.

ગુનાહે કબીરા

અલ્લાહ તઆલા પારહ 27 સૂરએ નજમ આયત નં 32 મેં ફરમાતા હૈ :

તર્જમા : વોહ જો ગુનાહે કબીરા ઔર બે હયાઈયોં સે બચતે હેં મગર બસ ઈતના કી ગુનાહ કે પાસ ગએ ઔર રુક ગએ બેશક ! તુમ્હારે રબ કી મગફિરત વસીઅ હૈ.

ગુનાહોં કી દો (2) કિસ્મેં હૈ સગીરા ઔર કબીરા

ગુનાહે કબીરા વોહ ગુનાહ હૈ જિસ પર અઝાબે સખ્ત હો યા ફિર જિસ પર વઈદ (Warning) આઈ હો, આદમી કે હક મેં બેહતર હૈ કે વોહ હમેશા તાઈબ રહે મુઆફી માંગતા હી રહે.

अल्लाह के आगे रोना

कुरआने करीम पारह 27 सूरे अे हदीद आयत नं. 16 में है के अल्लाह तआला इरमाता है के

तर्जमा : क्या ईमान वालो को अत्मी वोह वक्त नहीं आया के उन के दिल अल्लाह की याद और उस हक (कुरआने करीम) के लिये रुक जाये जो नाजिल हुवा.

उम्मुल मोमिनीन ताहिरा, आबिदा, ज़ाहिदा महबूबाअे महबूबे पुदा, सिदीके अकबर की लप्ते ज़गर, राजदारे रसूल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इरमाती है : रसूले मकबूल अपने दौलत कदअे अकदस से बाहर तशरीफ़ ले गअे तो मुसलमान आपस में हंस रहे थे और येह हंसने वाले भी मा'भूली मुसलमान न थे बल्के सहाबअे रसूल थे आप ने उन को हंसते देख कर इरमाया : "तुम हंसते हो जब के अत्मी तक तुम्हारे लिये तुम्हारे रब की तरफ़ से अमान नहीं आई" और फिर सरकार ने येह इरमाया के तुम्हारे हंसने पर येह आयत नाजिल हुई.

सहाबा ने अर्ज किया अब ईस हंसी का कफ़ारा क्या हैं या रसूलल्लाह ! इरमाया ईतना ही रोना और आप ने येह भी इरमाया के ज़ियादा हंसना दिल को सप्त कर देता है.

हिकायत : हजरते इज़ैल ईब्ने अयाज़ की तौबा का वाक़िआ

हजरत का शुमार अहले तक़्वा में होता है आप अपने दौरे के कामिल शैख़ व बा क़माल जुज़ुर्ग़ है मगर ईब्तिदाई दौर में आप के मुआमले बणे अज्जब थे, आप टाट का लिबास सर पर उनी टोपी, गले में तस्बीह डाल कर जंगल में डाका डाला करते थे और आप डाकूओं के लीडर थे और ईस हालत में भी आप रोज़े से रहते थे नमाज़े पंजगाना के पाबन्द थे तिलावते कुरआने करीम किया करते थे यहाँ तक के साथियों में से कोई नमाज़ न पढता तो उसे जमाअत से (अपनी लूटमार करने वाली जमाअत से) अलग कर

દેતે થે યહાં તક કે કાફિલોં કો લૂટતે વક્ત કાફિલે મેં કોઈ ઔરત હો તો ઉસ કાફિલે કો ભી છોળ દેતે થે.

મગર આપ કા ખૌફ કાફિલે વાલોં પે હમેશા છાયા રહતા થા અબ હુવા યૂંકે એક મરતબા એક કાફિલા કરીબ મેં હી આ કર રુકા ઉસ મેં કોઈ એક શખ્સ બુલન્દ આવાઝ સે કિરાઅત કર રહા થા ઔર વોહ યેહી સૂરત પઢ રહા થા. સૂરએ હદીદ આયત નં. 16

તર્જમા : ક્યા ઈમાન વાલો કે લિયે અભી તક વોહ વક્ત નહીં આયા કે ઉન કે દિલ અલ્લાહ કે ઝિક્ક ઔર ઈસ કુરઆન સે ખૌફ ઝદા હો જાએ !

ઈસ આયત કા ઉસ વક્ત આપ પર ઐસા અસર હુવા કે જૈસે કિસી ને દિલ પર તીર માર દિયા હો આપ ને ખુદ સે કહા કે યેહ લૂટમાર કબ તક ? અબ વોહ વક્ત આ ચુકા હૈ અલ્લાહ કી રાહ પર ચલ પળે યેહ કહ કર આપ ને ઉસી વક્ત સચ્ચી તૌબા કી બહુત રોએ ઔર સબ બુરે કામ છોળ દિયે.

યેહ સચ્ચી તૌબા ને આપ કો ડાકૂઓં કે સરદાર કે બદલે વલિયોં કા સરદાર બના દિયા તો યેહ હૈ સચ્ચી તૌબા કા નતીજા ઔર યેહ હૈ અલ્લાહ કા ફઝલ. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

તોબતન્નુસૂહ ક્યા હૈ ?

પારહ 28 સૂરએ તહરીમ મેં હૈ કે

તર્જમા : ઐ ઈમાન વાલો ! અલ્લાહ કી તરફ ઐસી તૌબા કરો જો આગે કો નસીહત બન જાએ કરીબ હૈ કે તુમ્હારા રબ તુમ્હારી (તમામ) બુરાઈયાં ઉતાર દે ઔર તુમ્હેં ઐસે બાગોં મેં લે જાએ જિસ કે નીચે નહરે બહે.

યા'ની ઐસી તૌબા કરો જો તૌબા કરને વાલે કી ઝિન્દગી બદલ ડાલે ઔર તૌબા કે બા'દ ઉસ કી ઝિન્દગી ઈબાદતોં ઔર ઈતાઅતોં સે ભર જાએ ઔર ગુનાહ હમેશા કે લિયે છુટ જાએ હઝરતે સચ્ચિદુના ફારૂકે આ'ઝમ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ફરમાતે હૈ કે તૌબતુન્નુસૂહ યેહ

है के तौबा के बा'द आदमी कभी गुनाह की तरफ न पलटे, जैसा के थन से निकला हुवा दूध कभी वापस पिस्तान में नहीं जाता.

तौबा करने वाले को हजरते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के वा'दे

पारह 29 सूरेअे नूह आयत नं. 10 से 12 तक में है के

तर्जमा : तो कहा : अै लोगो ! अपने रब से (अपने गुनाहों की) मुआफ़ी मांगो वोह बणा मुआफ़ करने वाला है वोह तुम पर जोरदार बारिश भेजेगा और माल से और भेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिये भाग बगीचे बना देगा और नहरे जारी कर देगा.

जब नूह عَلَيْهِ السَّلَام की कौम बलाओं में मुप्तला हुई तो सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी कौम को तौबा व अस्तगफ़ार करने को कहा और कहा के अगर तौबा करोगे तो वोह तुम्हें ब कस्तत माल और औलाह अता करेगा.

हजरते इसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के अेक शप्स आप की भिदमत में आया और उस ने बारिश न होने की शिकायत की आप ने उसे अस्तगफ़ार करने का हुकम दिया.

दूसरा अेक शप्स आया जिस ने तंगदस्ती की इरियाह की आप ने उसे भी तौबा व अस्तगफ़ार करने का हुकम दिया अेक तीसरा शप्स आया उस ने औलाह न होने की शिकायत की आप ने उस को भी वोही तौबा अस्तगफ़ार का हुकम दिया, अेक चौथा शप्स आया उस ने जमीनी पैदावार की किल्लत या'नी भेती बाणी बे रौनक होने की इरियाह की तो आप ने उसे भी वोही तौबा अस्तगफ़ार का हुकम दिया.

हजरते रबीअ बिन शौबा जो उस वक्त हजरत की मजलिस शरीफ़ में मौजूद थे उन्हों ने हजरत से अर्ज की : या ईब्ने रसूलुल्लाह ! यन्द लोग आप की बारगाह में आये उन्हों ने किस्म किस्म की शिकायतें की आप ने सब को अेक ही जवाब दिया तो

હઝરત ને યેહી ઊપર વાલી સૂરએ નૂહ કી આયત પઢી ઔર બતાયા કે ઈસ ઝરૂરતોં કે લિયે યેહ કુરઆની અમલ હૈ. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

જાહિલોં સે દૂર હટ જાઓ

મૌલાના રૂમ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** કા એક શે'ર કાબિલે ગૌર હૈ આપ ફરમાતે હૈ :

સોહબતે સાલેહ તુરા સાલેહ કૂનદ સોહબતે તાલેહ તૂરા તાલેહ કૂનદ

અસ્હાબે કહફ કા કુત્તા નેકોં કી સોહબત મેં રહ કર જન્નતી બન જાતા હૈ ઔર પૈગમ્બર હઝરતે નૂહ **عَلَيْهِ السَّلَام** કા બેટા કાફિરોં કી દોસ્તી વ સોહબત અપના કર જહન્નમી બન જાતા હૈ તો ઈન્સાન કો યાહિયે કે કાફિરોં, બદ મઝહબોં યા જાહિલોં સે અપને કો દૂર રખે.

યેહ ભી એક હકીકત હૈ કે આપસ મેં સિલએ રહમી કરો રિશ્તે ન તોળો વગૈરા વગૈરા મગર યેહ બાત જાહિલોં કે સાથ નહીં અહમક, બે વુફૂફ, જાહિલ યા બેબાક જો જી મેં આએ વોહ બકતે રહતે હૈ કિસી કો ગાલી દેતે હૈ ઈલ્લામ લગાતે હૈ બોહતાન લગાતે હૈ ઐસો કે સાથ ન રહા જાએ લોગોં કો બુરાઈ સે રોકા જાએ અગર ન રુકે તો ઉન સે કિનારા કર લિયા જાએ આઈએ દેખે કે ઈસ બાબ મેં અલ્લાહ તઆલા ક્યા ફરમાતા હૈ :

અલ્લાહ તબારક વ તઆલા કુરઆને કરીમ પારહ 9 સૂરએ આ'રાફ આયત નં. 199 મેં ફરમાતા હૈ કે તર્જમા : ઐ મહબૂબ લોગોં કો મુઆફ કરતે રહો ઔર ભલાઈ કા હુક્મ દો ઔર જાહિલોં સે કિનારા કર લો.

યા'ની દૂર હટ જાઓ સમજાઓ માને તો ઠીક હૈ ઔર ન માને તો તુમ્હારા કામ સિર્ફ સમજાના હૈ નસીહત કરના હૈ ઝબરદસ્તી મનવાના તુમ પર ઝરૂરી નહીં હૈ તો બે ફાઈદા ગૈર ઝરૂરી બાતેં ન કરો અપના વક્ત બરબાદ ન કરો મગર દૂર હો જાઓ ઔર રબ ફરમાતા હૈ : પારહ 19 સૂરએ ફુરકાન આયત નં. 63 મેં કે

तर्जमा : ज़ाहिल तुम से बात करे तो कडो बस (दूर से) सलाम.

यहां अल्लाह तआला के पास बन्दों का जिक्र है के जब ज़ाहिल उन से बहस (यर्था) या मुजादला (जगणा) करता है तो उसे कडते है के बस सलाम या'नी येह सलाम सलामे मुतारीकत या'नी जुदाई का सलाम है न बहस न लणाई जगणे बस तुज से दूरी या'नी तू तेरे रस्ते में मेरे रस्ते और अल्लाह तआला पारह 27 सूरअे आरियात में इरमाता है :

तर्जमा : औ महबूब ! तुम अगर उन से मुंह फेर लो तो तुम पर कोई इल्जाम नहीं और समजाओ के समजाना मुसलमानों को झार्छा देता है.

जब के हमारा मुआमला इस से उल्टा है, हम बुरो का साथ नहीं छोणते है.

यहां येह कडा गया के अगर तुम को औसा लगे के समजाने से मानेगा तो अल्लाह इरमाता है समजाओ समजाना मुसलमानों में से जो समजाना याहे उसे झार्छा देता है और अगर तुम ने मुंह फेर लिया और हट गये तो तुम पर कोई इल्जाम नहीं और अल्लाह तआला पारह 27 सूरअे नज्म आयत नं. 29 में इरमाता है : तुम उन से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिर गया और उस ने सिर्फ दुन्या की जिन्दगी के सिवा कुछ न याडा.

या'नी जिस के दिल में पौड़े फुदा नहीं जो बकवास करते वक्त बातों का अन्जाम नहीं सोचता और जो बस दुन्या ही याहता है औसो से दूर हट जाओ मुंह फेर लो, रिश्ते न रभो अपना अजीज तो बस वोही डो सकता है जो फुदा का डो जो फुदा का नहीं वोह हमारा नहीं. पारह 29 सूरअे मुज़्जम्मिल आयत नं. 10 में है के

तर्जमा : औ महबूब ! जो लोग बुरा बला कडते है उस पर सन्न करो और उन्हें अच्छी तरह छोण दो.

या'नी किसी को जवाब न दो बकने दो इन बकने वालों को.

એક મરતબા હમ ને શૈખુલ ઈસ્લામ સે સુવાલ ક્રિયા : હઝરત ! હમારી મુખ્તસર ઝિન્દગી હૈ નેક્રિયાં તો કુછ હમારે પાસ નહીં હૈ હમં જન્નત કેસે મિલેગી ? ફરમાયા : એક તો સાલિહીન વ મોમિનીન કી દુઆઓં સે તુમ્હેં હિસ્સા મિલેગા ઔર દૂસરા વોહ જો લોગ તુમ્હેં ગાલિયાં દેતે હૈ તુમ્હારી ગીબત કરતે હૈ ઈલ્લામ લગાતે બોહતાન લગાતે હૈ બુરા ભલા કહતે હૈ, તુમ્હારા માલ ખાતે હૈ દર હકીકત વોહ અપની નેક્રિયાં તુમ્હેં દેતે હૈ ઔર તુમ્હારે ગુનાહ અપને ઊપર લેતે હૈ તુમ્હારા ઈન તકાલિફોં પર ખામોશ રહના ઔર અલ્લાહ કી રિઝા કે લિયે સબ્ર કરના, બદલા ન લેના તુમ કો જન્નત કે મુસ્તહિક બના દેંગે. **سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ**

બુરાઈ સે ન રોકને વાલે

દેખા યેહ જાતા હૈ કે આજ મુઆશરે મેં બુરાઈ આમ હો ગઈ હૈ લોગ એ'લાનિયા બુરે કામ કરતે નઝર આતે હૈ ઔર અફ્સોસ તો યેહ કે હમારે કૌમી લીડર લોગ (નેતા) વગૈરા ઔર મઝહબી લીડર ઔર ઉલમા, ઈમામ, મુકર્રીર હઝરાત મેં સે શાયદ હી કોઈ અપની કલમ યા અપની ઝબાન ઉન કો રોકને કે લિયે ચલાતે હૈ બલ્કે જિન કી ઝિમ્મેદારી થી કે નહયુન અનિલમુન્કર યા'ની બુરાઈયોં સે રોકને કા કામ કરે વોહ ખામોશ બૈઠે હૈ ઔર ખામોશ હી નહીં બલ્કે કહીં કહીં તો સાથ દેતે નઝર આતે હૈ અખ્લાકી ગિરાવટ હદ સે ઝિયાદા બઢ ચુકી હૈ.

મુઆમલા ઈતની હદ તક બિગળ ચુકા હૈ કે હમં વહાબિયોં અહલે હદીસ વગૈરા કી ગલતી તો નઝર આતી હૈ મગર ખુદ હમારી અપની નઝર નહીં આતી ઉર્સ કે મૌકેઅ પર દેગે પકતી હૈ પર મસ્જિદે ખાલી હૈ ખુદ સ્ટેજ પર બૈઠ કર લોગોં કો નમાઝ કી દા'વત દેને વાલે બે નમાઝી હૈ લોગ સૂદી લૈન દૈન કરતે હૈ, બે હયાઈ આમ હૈ ઔર ઉલમા ખામોશ હૈ આઈયે દેખે કે ઈસ બાબ મેં કુરઆન હમારી ક્યા રહનુમાઈ કરતા હૈ.

पारह 6 सूरे अे माईदह आयत नं. 62 में अल्लाह तआला इरमाता है :

तर्जमा : तुम बहुत लोगों को देभोगे के गुनाह और जियादती और हराम भोरी पर दौणते हैं, बेशक ! बहुत ही भुरे काम कर रहे हैं उन्हें पादरी और दरवेश गुनाह की बात कहने और हराम भोरी से क्यूं नहीं रोकते ? बेशक ! येह बहुत भुरे काम है जो कर रहे है.

यहां पादरी और दरवेश से मुराद मजहबी लीडरान है के वोह क्यूं भुरा काम करने वाले को नहीं रोकते ? वोह बेशक ! भुरे काम कर रहे है मत्लब के येह लोगों को भुराई से नहीं रोकने वाले बहुत ही भुरे काम कर रहे है.

ईस से मा'लूम हुवा के उलमा पर नसीहत करना वाजिब हैं और जो आलिम अम्र बिल मा'रुफ और नहयुन अनिलमुन्कर करना छोण देता है वोह येह रोकना तर्क करना उन्हें गुनाह में बराबर शामिल कर देता है यहां तक कहा गया के जो ईन्सान गुनाह छोते देभ कर भामोश रहा वोह गुंगा शैतान है.

आज देभा येह गया के उलमा तकरीरे करते है और अल्लाह तआला की तरफ से नाजिल की गई रहमत की आयतें तो पढ पढ कर सुनाते है मगर लोगों को भुराई से नहीं रोकते और भा'ज तो मिम्बरे रसूल पर भणे हो कर चुटकुले सुनाते है लफ्फाजी करते है कुछ उलमा भुराई को देभते हुअे ईस लिये भी युप रहते है के अगर वोह बोलेंगे तो उन के नजराने बन्द हो जाअेंगे.

अल्लाह तआला ने भुराई से न रोकने वालों पर हजरते द्वावूद عَلَيْهِ السَّلَام और हजरते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की जभान से ला'नत लेख है साबित शुदा बात है के भुराई से लोगों को रोकना उलमा पर वाजिब है और भुराई से रोकने से दूर रहने वाला तर्क वाजिब कर के अपने को गुनाह में शामिल करता है.

લોગોં કો અલ્લાહ કી નાફરમાની સે રોકને વાલે

ફરિઝએ તબ્લીગ યેહ હૈ કે જિસ તરહ લોગોં કો અલ્લાહ તઆલા કી ઈબાદત કે લિયે બુલાયા જાના ચાહિયે ઉસી તરહ ઉન કો બલકે ઉસ સે ભી ઝિયાદા ઉન કો બુરાઈયોં સે રોકના ભી ચાહિયે લોગોં કો અલ્લાહ કે અઝાબ સે ડરાના ઓર ગુનાહ સે રોકના ઝિયાદા ઝરૂરી હૈ.

જિસ તરહ નમાઝ પઢને સે પહલે અગર ગુસ્લ વાજિબ હો તો ગુસ્લ ઓર ગુસ્લ વાજિબ ન હો તો વુઝૂ ઝરૂરી હૈ બિલ્કુલ ઈસી તરહ ભલાઈ કરને સે પહલે બુરાઈ ઈબાદત ઝરૂરી હૈ કોઈ ઈન્સાન પહલે મુર્તિ પૂજા કરતા થા અબ અગર કલિમા પઢ કર ઈમાન લા કર નમાઝ પઢના ચાહે તો પહલે મુર્તિ પૂજા ઈબાદત ઝરૂરી હૈ હમારે કલિમે મેં યેહ ભી ઈસ્બાત ઈલલ્લાહ (ઈકરાર) સે પહલે નફી લાઈલાહ હૈ યા'ની પહલે બાતિલ કા ઈન્કાર ઓર ફિર હક કા ઈકરાર.

હમારે નબી ﷺ ને હમેં ફરમાયા : મેં જિસ કામ કરને કા તુમ્હેં હુકમ દૂં ઉસ મેં સે જિતના બન સકે ઈતના કરો યા'ની ફરાઈઝો વાજિબાત તો પૂરા કરો મગર નવાફિલ જો બન સકે ઈતના કરો મગર જિસ કામ સે રોકૂ ઉસ સે પૂરે પૂરા રુક જાઓ.

અલ્લાહ તઆલા ને અમ્બિયા ﷺ કો ઈસી લિયે ભેજા કે વોહ અલ્લાહ કે બન્દોં કો ડરાએ યેહ સિર્ફ બિશારત દેને વાલે ન થે બલકે બશીરો નઝીર થે. યા'ની ખુશ ખબરી દેને વાલે ઓર ડરાને વાલે. કુરઆને કરીમ પારહ 7 સૂરએ અન્આમ આયત નં. 19 મેં હૈ કે

તર્જમા : મેરી તરફ ઈસ કુરઆન મેં વહી કી ગઈ કે મેં તુમ્હેં ઈસ સે ડરાઊ (યાની ખોફ દિલાઊ) ઓર જિન જિન કો કુરઆન પહુંચે (વોહ ભી ડરાએ).

સરકારે દો આલમ ﷺ ને અપને દૌર કે તમામ ઈન્સાનોં કો ફરમા દિયા કે મેરી તરફ વહી કી ગઈ કે મેં તુમ્હેં ડરાઊં

के तुम हुक्मे ईलाही की मुखाविफ्त न करो और कहा : मेरे बा'द क्रियामत तक आने वाले ईन्सान हो या जिन्न जिन्हें येह कुरआन पहुंचे सब को मैं हुक्मे ईलाही की मुखाविफ्त से उराउं।

जब येह आयते करीमा नाजिल हुई तो सरकारे दो आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने केशरो किसरा, (इम व फ़ारस के बादशाहों) को दा'वते ईस्लाम के लिये भुतूत (लेटर) भेजे हदीस शरीफ़ में हे के जिस को भी कुरआन पहुंचा गोया के उस ने नबिये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को देभा और आप का कलाम सुना।

ईस आयते मुबारका की तफ़सीर में येह भी कहा गया है के **मम बलग** से मा'ना मुराद येह है के ईस कुरआन से तुम को उराउं और वोह भी उराअे जिन को येह कुरआन पहुंचे (वोह भी उराअे.)

तिर्भिजी शरीफ़ की हदीस में है के “अल्लाह तरो ताऊा करे उस को जिस ने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया.” बहूत से पहुंचाअे हुअे (पहुंचाने वाले) सुनने वालों से भी जियादा अहल (योग्य, लायक) होते है और अेक रिवायत में है के जियादा “अक़्क़ह” (इकीह) होते है ईस बात से कुकहाअे किराम की कद्रो मन्जिलत मा'लूम होती है।

अल हासिल अल्लाह तआला के बन्दों को अल्लाह पाक की ना इरमानियो से बयाना (उराना) बेहद ज़रूरी है और बेहतरीन अमल है जिस का तर्क करना गुनाह में शामिल होना है और जिस पर अमल करना अल्लाह के हुक्म पर अमल करना है।

नह्युन अनिल मुन्कर ज़रूरी है

हज़रते ईब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से रिवायत है के अल्लाह तआला ने मोमिनीन को हुक्म इरमाया के वोह अपने दरमियान ममनूआत (मन्अ किये गअे काम) न होने दे और अपनी हैसियत या ताकत त्तर गुनाहों से मन्अ करे अगर अैसा न किया तो अज़ाब ખताकार और गैर ખताकार सब को पहुंचेगा।

सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरमाया : अल्लाह यन्ट मप्सूस लोगों के गुनाह के सबब आम अजाब नहीं नाज़िल इरमाता, जब तक के लोग औसा न करे के अपने भीय में गुनाह के कामों को छोटा हुवा देखे और मन्अ करने की ताकत छोते हुअे उसे न रोके.

मा'लूम हुवा के जो कौम या जो समाज “नह्युन अनिल मुन्कर” या'नी बुराई से रोकना तर्क कर देती है उस कौम पर बुरी बलाअे आती है. अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 9 सूअे अन्फाल आयत नं. 25 में इरमाता है :

तर्जमा : और (औ लोगो !) उस कित्ने से उरो जो हरगिज़ तुम में से सिर्फ़ ज़ालिमों ही को न पडुंयेगा और जान लो के अल्लाह का अजाब सप्त है.

येह मत समजो के सिर्फ़ ज़ालिमों ही पर मुसीबत या बला आयेगी और तुम बये रहोगे अगर लोगों को गुनाहों से रोकना तर्क कर दिया या'नी लोगों को गुनाह में देख कर षामोश रहे तो बलाअे सब पर आयेगी.

तरीकअे दा'वत

अल्लाह तबारक व तआला अपने पाकीजा व मुकदस कलाम कुरआने करीम इरकाने हमीद में पारह 14 सूअे नहल आयत नं. 125 में ईरशाह इरमाता है :

तर्जमा : अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अय्ही नसीहत से और उन से बहस करो उस तरीके पर जो सब से बेहततर हो. बेशक ! तुम्हारा रब अय्ही तरह से जानता है जो उस की राह से बहका और वोह जानता है जिस ने राह पाई.

ईस अेक आयते शरीफ़ा में अल्लाह तबारक व तआला ने हमें कई सारे अहकाम ता'लीम इरमाअे अब ईसे समजो बिगैर जो तब्लीग करते है या जो ज़हिल ट्रस्टी माईक हाथ में ले कर तकरीरे

करते हैं वोह गुमराह है और गुमराही की तरफ़ बुलाते हैं जैसे देवबन्दी तब्लीगी जमाअत वाले और दूसरे तकरीर करने के शौकीन जो न जानते हुअे भी लगे रहते हैं. ईमाम को हटा कर उस की जगह फुद शुअ़अ़ हो जाते हैं.

अेक सुवाल है के पक्की तदबीर या अख़्शी नसीहत येह वोही कर सकता है जो पहले ईल्म हासिल करे, उलमाओ की सोहबत में या दर्सगाहों में जाअे दीन की बारीकियां समजे अब यहां तो मुआमला येह है के रिक्वा यवाने वाला, गेरेज में काम करने वाला भी बयान देता है और वकील, अेन्जनीयर बिडर भी बयान देता है क्या उन के लिये ज़रूरी नहीं था के पहले ईल्म हासिल करते !

अेक दौर था जब उलमा तब्लीग करते थे, औलिया तब्लीग करते थे और अब जाहिल तब्लीग व तकरीर करते हैं. सरकार ने इरमाया है : ना अहल के सिपुई जब कोई काम सोंपा जाअे तो बस कियामत का ईन्तिज़ार करो. यहां तो अैसे लोग ईमामत करते हैं की नमाज़ी उन के पीछे नमाज़ पढने में कराहत महसूस करता है.

दीन की द्वा'वत देने वाला लोगों को दीन की तरफ़ बुलाने वाला फुद दीनदार हो येह ज़रूरी है, यहां तो कुछ मग़अ़र, मुतकब्बीर ज़ूट भोलने वाले, धोका इरेब करने वाले भी बयान शुअ़अ़ कर देते हैं और वाकेई जो अहल है ईल्म रफते हैं वोह ज़ामोश है मुआमला बस येह है के नीम हकीम फतरे जान.

अपने कराहतदारों को डराओ

अल्लाह तबारक व तआला कुरआने करीम पारह 19 सूअे शुअ़रा आयत नं. 214 में इरमाता है :

तर्जमा : अै महबूब ! अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ.

जो करीब है उन्हें अल्लाह पाक की नाइरमानियों और नाराज़गी के काम से रोको जब के आज कल यहां तो हो येह रहा है के बेटा शराब का कारोबार करता है और बाप यालीस दिन के

बिस्ले में जा रहा है बेटी बिगैर पर्दा किये बाजारों में फुल्ली घुमती है और आप दुन्या को दीन सिभाने जाता है दूकान में नौकरों से वज़न में थोरिया करवाते हैं और हम लोगों को नेकी की द्वा'वत दे रहे है लोग अपने घरों में रिश्तेदारों में पणोसियों में तब्लीग नहीं करते. अफ़सोस !

जो लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाये

अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 24 सूरे अे लामीम आयत नं. 33 में फ़रमाता है के :

तर्जमा : और उस से बढ कर किस की बात अच्छी हो सकती है के जो लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाये और फुद नेकी करे और कहे के मैं मुसलमान हूँ.

हज़रते आ'शशा सिदीका رضي الله تعالى عنها फ़रमाती है के मेरे नज़दीक येह आयत मुअज़्ज़िन हज़रात के हक में नाज़िल हु'ए और अेक कौल येह है के जो को'ए त्नी किसी त्नी तरीके से लोगों को दीन की द्वा'वत दे कर अल्लाह की तरफ़ बुलाये वोह सभ 'स में द्वाबिल है द्वा'वते 'लल्लाह के बणे मर्तबे है.

मौत से महबूबत

मौत अेक अैसी हकीकत है के तमाम जानदार को उस से साबिका है को'ए जान अैसी नहीं जिस के लिये मौत नहीं येह अलग बात है के मौत किसी के लिये महबूब थीज़ है 'सी लिये की मौत उस के लिये महबूब से मुलाकात का जरीआ है और मौत किसी के लिये अज़ाब है.

कु'ए लोग है जो 'मान नहीं लाते न अल्लाह से उरते है और दुन्यवी जिन्दगी ही को सभ कु'ए समज़ बैठे है, अैसे लोगों से अल्लाह पाक का फ़रमान है :

पारह 1 अल बकरह आयत नं. 94 में :

तर्जमा : औ मडबूब ! तुम उन से इरमा दो के अगर पीछला घर (आभिरत) सिर्फ तुम्हारे ही लिये है तो तुम मौत की तमन्ना तो करो ! या'नी मौत मांगो.

येह उन लोगों से पिताब था जो दौरे रिसालत के यहूद और ईसाई कडा करते थे के जन्नत में हमारे सिवा कोई नहीं जायेगा येह उन की पाम भयाली थी मौत की मडबूबत और लिकाअे परवर दिगार का शौक येह अल्लाह तआला के मकबूल बन्दों का तरीका रडा वोह जानते है इह का जिस्म से अलग छोते (मरते) ही कब्र में जाने के बा'द कब्र में रसूले करीम तशरीफ लाने वाले है ईसी लिये वोह ईमान पर आतिमे की दुआअे करते रहते है. हजरते इाइके आ'जम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** हर नमाज के बा'द दुआ इरमाते थे :

अल्लाहुम्मरजुकनी शहादतन ई सबिलीक व वफ़ातन भी बलही नबियिक या'नी औ अल्लाह ! मुझे तेरी राह में शहादत और तेरे नबी के शहर में वफ़ात अता इरमा.

तमाम सहाबअे किराम और पास कर के बद्र और उहुद के शुहदा और बैअते रिजवान वाले सहाबा अल्लाह की राह में शहादत की तमन्ना रभते थे, सहाबिअे रसूल हजरते सा'द बिन अभी वक़ास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने काफ़िरो के लशकर के सरदार रुसतम को जो भत भेजा उस में लिपा के ईन्न मअन कौमन युहिब्बुल मौत या'नी मेरे साथ अेक औसी कौम है जो मौत को मडबूब रभती है.

मोमिन हमेशा मौत को शहद से जियादा भीठी समजते है येह अलग बात है के किसी दुन्यवी परेशानी से तंग आ कर मौत की तमन्ना न करनी याहिये, क्यूंके दुन्या मोमिन के लिये कैदपाना है और जेल तोण कर भागना नहीं याहिये की येह जेल तोण कर भागना (भुदकुशी करना) गुनाह है.

येह भी अेक अलग हकीकत है के मौत को मडबूब रभते हुअे भी मोमिन लम्बी उम्र याहता है तो वोह सिर्फ ईस लिये के

नेकियां करने का ज़ियादा मौकअ मिल जाये और गुनाहों से तौबा करने का ज़ियादा मौकअ मिल जाये भुश नसीबी येह है के उम्र लम्बी हो और नेकियां ज़ियादा हो और लम्बी उम्र मिले तो तौबा अस्तग़फ़ार कर ले कुछ दीन की और कुछ कौम की भिदमत कर ले.

मौत की हकीकत

मौत एक ऐसी हकीकत है के उस से कोई बय न सका न कोई बय सकेगा. बेशक ! हर नफ़्स को मौत का मजा यখনा है साथ में येह भी जान लेना ज़रूरी है के बिगैर अल्लाह तआला के याहे कोई जान मर नहीं सकती है. जैसा के पारह 4 आले एमरान आयत नं. 145 में है के

तर्जमा : कोई जान बिगैर हुकमे भुदा मर ही नहीं सकती.

और उस का दूसरा पहलू येह है के जब मौत का वक्त आ जाये कोई तुम्हें बया नहीं सकता. जैसा के पारह 5 सूरे अनेसा आयत नं. 78 में है के

तर्जमा : तुम जहां कही भी (छुपे) रहो मौत तुम तक पहुंचेगी याहे तुम मजबूत किले में हो.

या'नी एन्सान मौत से बयने के याहे कितने भी हथकन्डे अपना ले जब हुकमे अल्लाह आ पहुंचा तो अब तुम्हें कोई नहीं बया सकता अब मरना ही है उस से बयने की कोई सूरत है ही नहीं.

मौत से पहले आठमाघश

अल्लाह तआला कुरआने करीम पारह 17 सूरे अम्बिया आयत नं. 35 में इरमाता है :

तर्जमा : हर नफ़्स को मौत का मजा यখনा है और हम तुम्हें आठमाते है त्वाह और बुराह से और तुम्हें हमारी ही तरफ़ वापस आना है.

અલ્લાહ તઆલા બન્દે કો રાહતો તક્લીફ, આઝમાઈશો બલા ઓર ને'મત દે કર આઝમાતા હૈ કે કૌન સાબિરો શાકીર રહતા હૈ ઓર કૌન નહીં વૈસે હી અલ્લાહ તઆલા ને પારહ 29 સૂરએ મુલ્ક આયત નં. 1 મેં ફરમાયા :

તર્જમા : બળી બરકત વાલા હૈ વોહ (અલ્લાહ) જિસ કે કબ્જે મેં તમામ મુલ્ક હૈ ઓર વોહ સબ કુછ કર સકતા હૈ ઉસી ને મૌત ઓર ઝિન્દગી પૈદા ફરમાઈ તાકે દેખે કે કૌન તુમ મેં સે અચ્છે આ'માલ કરતા હૈ.

અબ બેહતર હૈ કે આદમી ખુદ દેખે કે ઉસ ને કેસે આ'માલ કિયે ? ક્યા વોહ કસોટી મેં ખરા ઉતરા કી નહીં ઉતરા.

અલ્લાહ પાક હમેં સચ્ચી પક્કી તૌબા નસીબ ફરમાએ ઓર નેકી કી દા'વત દેને બુરાઈ સે રોકને ઓર અપની કબ્રો આખિરત સંવાર ને કી તૌફીક અતા ફરમાએ. આમીન

તૌબા કે મુતઅલ્લિક ઝિયાદા મા'લૂમાત હાસિલ કરને કે લિયે મોહદિસે આઝમ મિશન કી શાએઅ કર્દા કિતાબ અલ્લાહ મેરી તૌબા કો પઢિયે ઓર ઈસ કિતાબ ઓર દીગર (મોહદિસે આઝમ મિશન કી જાનિબ સે છપને વાલી કિતાબોં) કો ખરીદ કર અપને મર્હૂમીન કે ઈસાલે સવાબ કે લિયે મુફ્ત તક્સીમ કીજિએ.

કિતાબોં કી છપાઈ મેં મર્હૂમીન કે ઈસાલે સવાબ કે લિએ રકમ (ડોનેટ) કરને કે લિએ મોહસિને આઝમ મિશન કા કોન્ટેક્ટ કરે :

મિશન H/O સેન્ટ્રલ કમેટી બેંક ડિટેલ :

IDFC FIRST BANK : MOHSINE AZAM MISSION

AC NO : 100 8831 2174

IFSC CODE : IDFB 0040309

તોબા કે મુતઅલ્લિક ચન્દ અહાદીસે મુબારકા

મુલાહમ્મા કીજિએ !!

﴿1﴾ હઝરતે સય્યિદુના અબૂ હુરૈરા رضي الله تعالى عنه સે રિવાયત હૈ કે સરકારે મદીના صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ને ફરમાયા : અલ્લાહ عز وجل ફરમાતા હૈ : “મૈં અપને બન્દે કે (મુઝ સે કિએ જાને વાલે) ગુમાન કે કરીબ હૂં ઔર જબ વોહ મુઝે પુકારતા હૈ તો મૈં ઉસ કે સાથ હોતા હૂં. (મુસ્લિમ શરીફ)

﴿2﴾ હઝરતે સય્યિદુના અનસ બિન માલિક رضي الله تعالى عنه ફરમાતે હૈં કે મૈં ને નબિયે કરીમ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم કો ફરમાતે હુવે સુના : અલ્લાહ عز وجل ફરમાતા હૈ : “ઐ ઈબને આદમ ! જબ તક તૂ મુઝે પુકારતા રહેગા ઔર મુઝ સે ઉમ્મીદ રખેગા તો મૈં તેરે ગુનાહોં કી મગફિરત ફરમાતા રહૂંગા ઔર મુઝે કોઈ પરવાહ નહીં.” (તિર્મિઝી શરીફ)

﴿3﴾ હઝરતે સય્યિદુના અનસ બિન માલિક رضي الله تعالى عنه ફરમાતે હૈં કે મૈં ને શહનશાહે મદીના صلى الله تعالى عليه وآله وسلم કો ફરમાતે સુના : “દુઆ માંગને સે મત ઉકતાઓ (ઘબરાઓ) ક્યૂંકે દુઆ કી હમરાહી મેં કોઈ હલાક ન હોગા.” (મુસ્તદરક)

﴿4﴾ હઝરતે સય્યિદુના જાબિર બિન અબ્દુલ્લાહ رضي الله تعالى عنه સે રિવાયત હૈ કે નૂર કે પૈકર તમામ નબિયોં કે સરવર صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ને ફરમાયા : “ક્યા મૈં તુમ્હેં ઐસી ચીઝ ન બતાઊં જો તુમ્હેં દુશ્મનોં સે નજાત દિલાએ ઔર તુમ્હારે રિઝ્ક મેં ઈઝાફા કર દે ? અપને દિન ઔર રાત મેં અલ્લાહ પાક સે દુઆ માંગા કરો ક્યૂંકે દુઆ મોમિન કા હથિયાર હૈ.”

(મજમઉઝ્ઝવાઈદ)

﴿5﴾ હઝરતે સય્યિદુના અબૂ હુરૈરા رضي الله تعالى عنه સે રિવાયત હૈ કે અલ્લાહ કે મહબૂબ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ને ફરમાયા : “જિસે યેહ પસન્દ હો કે અલ્લાહ પાક તંગદસ્તી કે વક્ત ઉસ કી દુઆએ કબૂલ ફરમાએ વોહ ખુશહાલી મેં દુઆ કી કસરત કિયા કરે.” (જામેઅ તિર્મિઝી)

﴿6﴾ હઝરતે સય્યિદુના ઉબાદા બિન સામિત رضي الله تعالى عنه સે રિવાયત હૈ કે હુઝૂરે પાક صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ને ફરમાયા : “સતહે ઝમીન પર જો મુસલમાન અલ્લાહ عز وجل સે કોઈ દુઆ માંગતા હૈ તો અલ્લાહ તઆલા ઉસ

કી વોહ મુરાદ પૂરી ફરમા દેતા હૈ યા ઉસ સે ઉસી કી મિસ્લ કોઈ બુરાઈ હટા દેતા હૈ જબ તક બન્દા કિસી ગુનાહ યા કત્એ રહમી કે બારે મેં દુઆ ન માંગે.” તો હાઝિરીન મેં સે એક શપ્સ ને ખળે હો કર અર્ઝ કિયા : “ફિર તો હમ બહુત ઝિયાદા દુઆએ માંગા કરેંગે.” તો ઈરશાદ ફરમાયા : “અલ્લાહ પાક બહુત ઝિયાદા દુઆએ કબૂલ ફરમાને વાલા હૈ.” (તિર્મિઝી શરીફ)

સબક : ઈન રિવાયાત સે તૌબા વ દુઆ માંગને કી અહમ્મિયત મા'લૂમ હુઈ કે બન્દે કો હર હાલ મેં અલ્લાહ પાક સે તૌબા વ દુઆ માંગતે રહના ચાહિયે, ક્યૂંકે દુઆ મોમિન કા હથિયાર હૈ બન્દે પર જબ ભી કોઈ મુસીબત યા ગમ આ જાએ તો ઉસે શિકવા શિકાયત કરને કે બજાએ અલ્લાહ પાક કી બારગાહ મેં દુઆ કરની ચાહિયે તાકે વોહ ઈસ મુસીબત, બીમારી પરેશાની કો દૂર ફરમાએ જિસ તરહ બન્દા તંગદસ્તી કી હાલત મેં અલ્લાહ પાક સે ગિળગિળા કર તૌબા વ અસ્તગફાર ઔર દુઆ માંગતા હૈ ઈસી તરહ અલ્લાહ પાક હમેં ખુશહાલી અતા કરે તો ઉસ ખુશી ઔર ખુશહાલી કે અય્યામ મેં હમેં ગુનાહોં કે બજાએ અલ્લાહ પાક સે દુઆ કરની ચાહિએ લેકિન આજ દેખા જાતા હૈ કે કિસી કે પાસ માલ નહીં હોતા યા ઔલાદ નહીં હોતી તો વોહ ખુશૂઅ વ ખુજૂઅ કે સાથ અલ્લાહ પાક કી બારગાહ મેં તૌબા અસ્તગફાર વ દુઆ મેં મશૂૂલ રહતા હૈ લેકિન જબ ઉસ સે કોઈ પરેશાની દૂર હોતી હૈ યા ઉસ કે ઘર કોઈ ખુશી કા મૌકઅ હોતા હૈ જૈસે ઔલાદ કા હોના યા બચ્ચી કી શાદી તો ઈસ મેં અલ્લાહ પાક કા શુક કરને કે બજાએ ઉસ કી નાફરમાની કી જાતી ઔર ખૂબ ગુનાહ કે કામ કિએ જાતે હેં, અગર કોઈ સમજાએ તો કહા જાતા હૈ મિયાં યેહ તો ખુશી કા મૌકઅ હૈ સબ ચલતા !! મેરે પ્યારે ભાઈયો એસા નહીં બલકે અલ્લાહ પાક હમેં કોઈ ખુશી કા મૌકઅ અતા કરે તો હમેં ઉસ મેં અલ્લાહ પાક કો રાઝી કરને વાલે કામ કરને ચાહિએ ન કે નાફરમાની વાલે. અલ્લાહ પાક હમેં સહીહ સમજ અતા ફરમાએ ઔર ખૂબ ખૂબ તૌબા વ અસ્તગફાર કરને કી તૌફીક અતા ફરમાએ. આમીન



ક્રિતાબ “તોબા વ દુઆ” કી છપાઈ મેં મદદ કરને વાલે ડોનર કે નામ

- 01) મોહસિને આઝમ મિશન, વાંકાનેર
- 02) “ ” મોડાસા
- 03) “ ” સરખેજ
- 04) “ ” પાદરા
- 05) “ ” ડભોઈ
- 06) “ ” ટંકારિયા
- 07) “ ” પ્રાતીજ
- 08) શૈખ મુઝકકર અલી (પેટલાદ)
- 09) પઠાણ ઈસ્કાનુલ્લાહ ખાન Oxford (બોરસદ)
- 10) એડવોકેટ મુશ્તાક ભાઈ (ધોલકા)
- 11) હાજી અબ્દુરઝઝાક ભાઈ (મિલન પેકેજિંગ)
- 12) હાજિયાની હવાબાઈ કાસમ ભાઈ
- 13) હનીફ ભાઈ
- 14) આદમ ભાઈ
- 15) હાજી અબૂ ભાઈ
- 16) હાજિયાની આઈશા બાઈ ઈસ્માઈલ ભાઈ
- 17) હાજી શફી ભાઈ
- 18) જિલ્લુભાઈ બાબૂ ભાઈ
- 19) હાજી સિકન્દર ભાઈ અમીન ભાઈ મેમણ
- 20) હાજિયાની ફરીદા બેન
- 21) મહૂમ હાજી ફકીર મુહમ્મદ ઈબ્રાહીમ ભાઈ વોહરા (ડભોઈ)
- 22) મહૂમા શકીના બીબી ફકીર મુહમ્મદ વોહરા (ડભોઈ)

मिशन का मकसद ड़ैम ड़ी ढिदमत

अम्नो मडुडुडत ड़ी ढांव डें, ढिदमत सुडुडो शलम ड़रें,
आओ ! ड़म सडु ढिलजुल ड़र , ड़ैगलडे नडुी ड़ो आलम ड़रें.



:- ढिलने ड़ा ड़ता :-

ड़क़तडुअे शेडुल ईसललडु, अललड़ ड़िरलनल ड़े सलडुने,

रसूललडुलडु, शलडे आलडु अडुडुडलडुलडु-380028

ओर ढोडुसलने आलडु ढलशन ड़ी तडुलडु ड़ुरलन्यें

ड़ोन्डेड़ट : 96 24 22 12 12